चकमक

दिसंबर, 1992

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

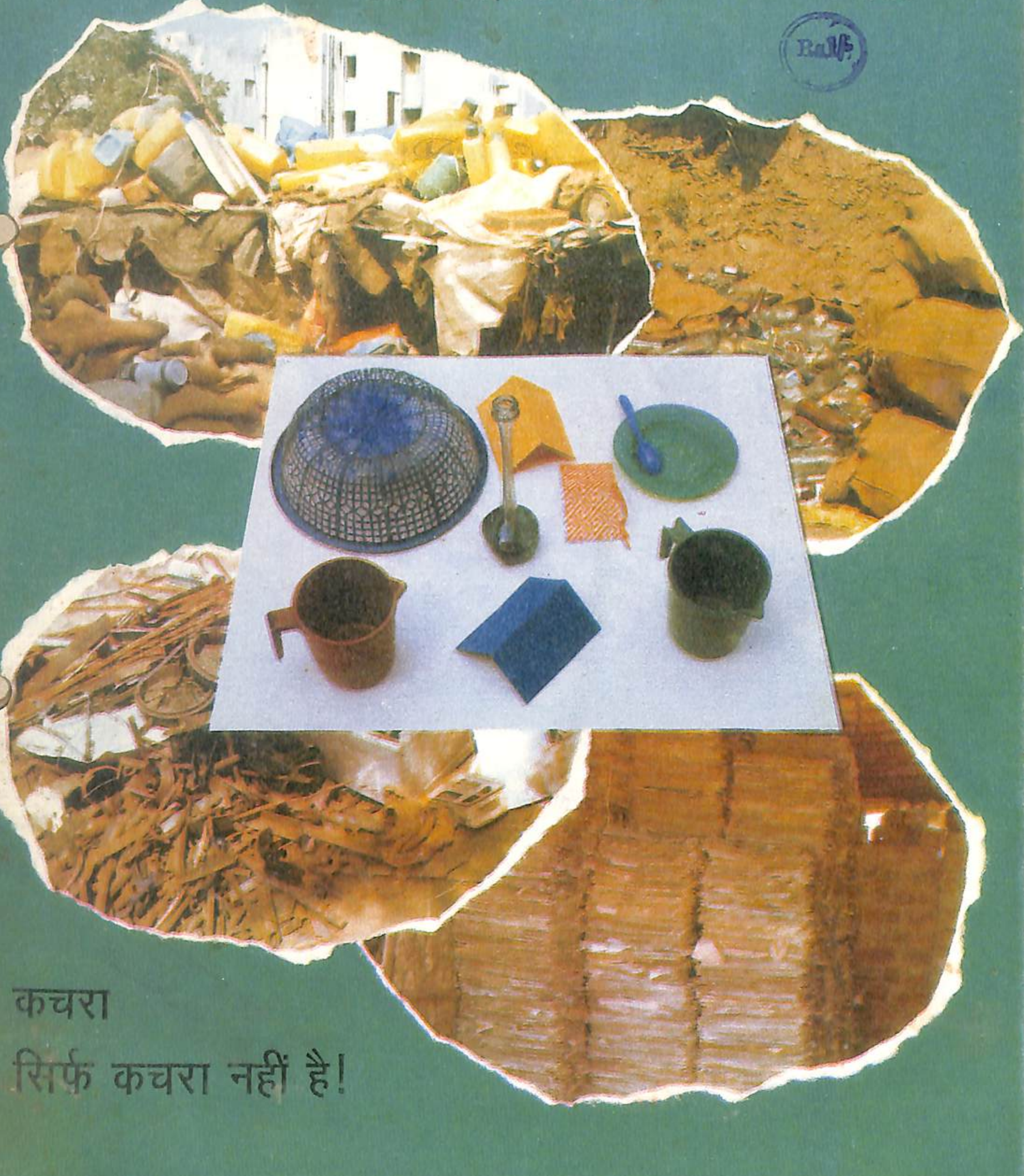

कचरा
सिर्फ कचरा नहीं है!

योगेश यादव, दूसरी, इंदौर, म.प्र.

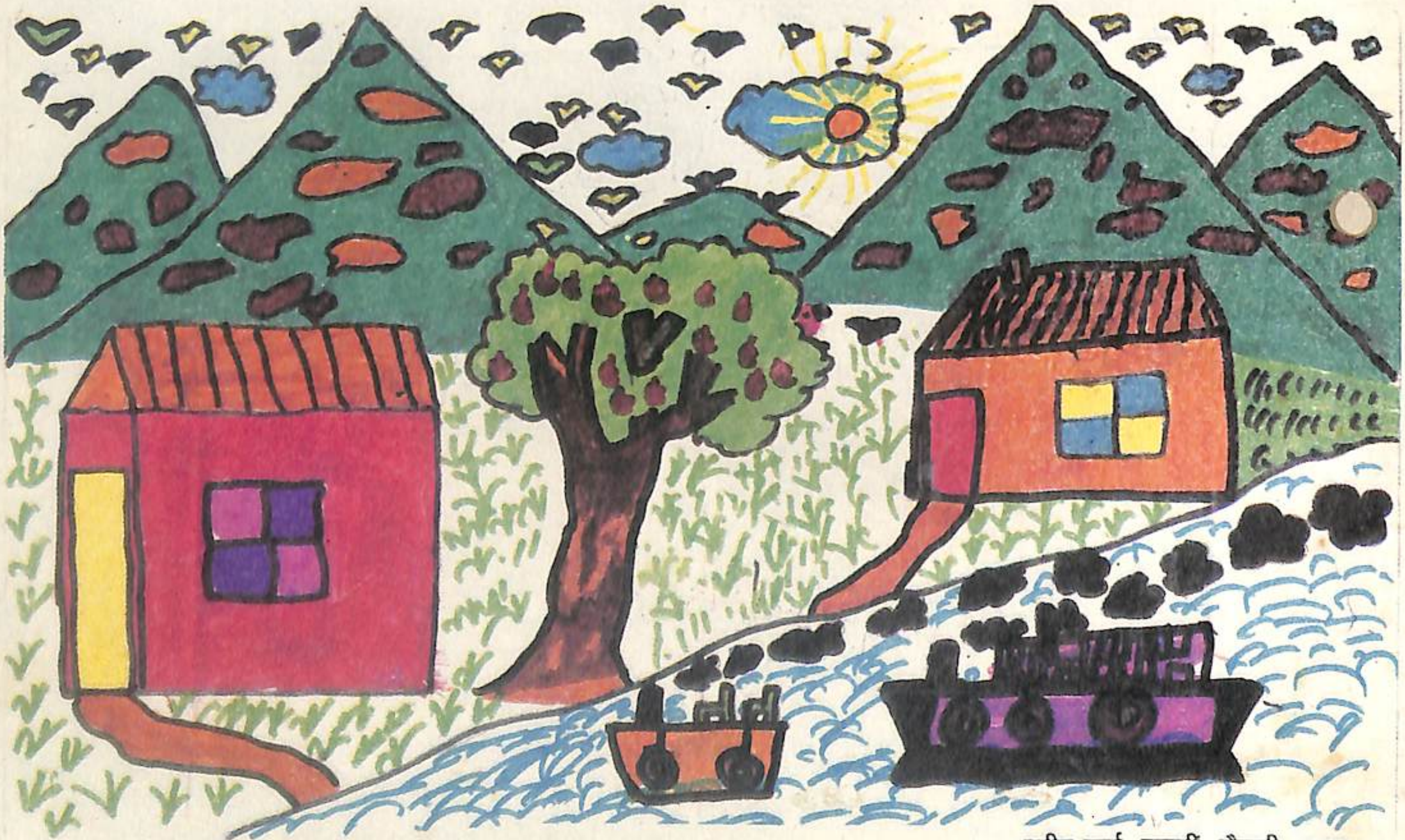

मनीष शर्मा, सातवीं, गौहाटी, असम

संजय कुमार पटेल, सांकर, बिलासपुर, म.प्र.

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-8 अंक-6 दिसंबर, 1992
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजे।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 563380

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

इस अंक में

विशेष

7 ❑ कूड़े की माया
12 ❑ कचरा सिर्फ़ कचरा नहीं है।

कविताएं

6 ❑ हॉकर
20 ❑ पांच कविताएं

कहानी

37 ❑ खेल और खिलौने

नाटक

22 ❑ कैसी-कैसी ख़बरें

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
11 ❑ हमारे वृक्ष-10 : आंवला
17 ❑ खेल पहेली
18 ❑ खेल काग़ज़ का
29 ❑ क्यों .. क्यों : 26
32 ❑ प्राचीन वैज्ञानिक-6 : वाग्भट
34 ❑ माथापच्ची
36 ❑ चित्रकथा

और यह भी

30 ❑ खेल खेल में
31 ❑ अपनी प्रयोगशाला

आवरण पर

जी हां ! कचरा सिर्फ कचरा नहीं है। कचरे को रीसाइकिल करके रोज़मर्रा के उपयोग की तमाम चीज़ें बनाई जाती हैं। प्लास्टिक, कांच, लोहा, काग़ज़ आदि को बड़ी मात्रा में रीसाइकिल किया जाता है। बीच के चित्र में दिखाई गई चीज़ें रीसाइकिल से ही बनी हैं।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

मेरे पैसे गए

एक दिन की बात है। मैं बाहर घूम रहा था। अचानक मेरी नज़र एक लड़के पर गई। वह लड़का पतंग उड़ा रहा था। उस समय मेरे मम्मी और पापा सो रहे थे। मैंने उस लड़के को ख़ूब आवाज़ दी पर वह नहीं आया।

फिर मैं चुपके-से गेट के ऊपर से कूदा और उस लड़के के पास गया। मैंने पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने बोला, "चंदन!"

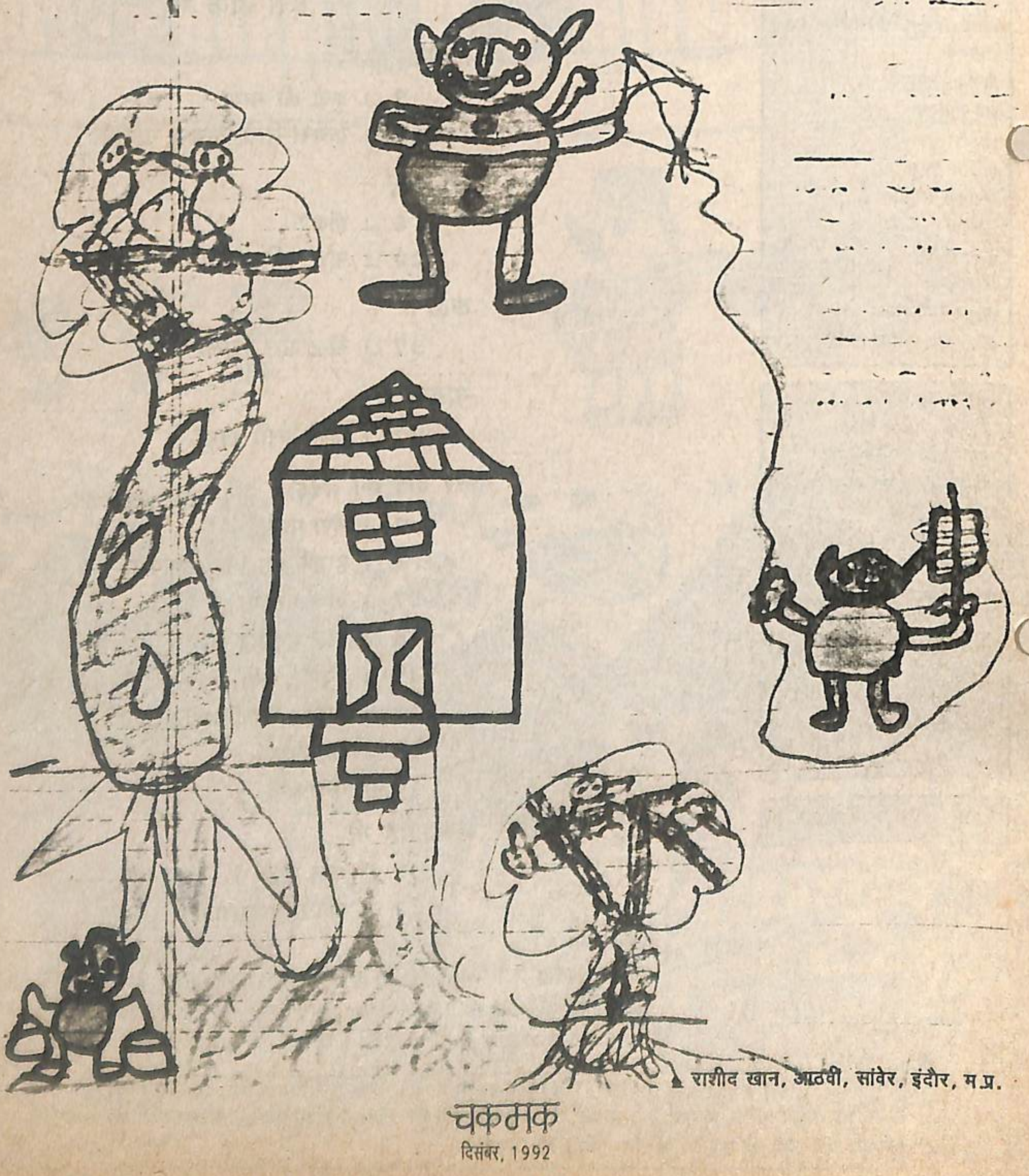

▲ राशीद खान, आठवी, सांवेर, इंदौर, म.प्र.

मैंने पूछा, "ये पतंग जो तुम उड़ा रहे हो, यह पतंग तुम कहां से लाए हो?"

तो उसने बोला, "बाज़ार से!"

मैंने पूछा, "कितने रुपए की?"

उसने बोला, " दो रुपए की।"

मैंने भी एक पतंग ख़रीद ली। पर मुझे पतंग उड़ानी तो आती नहीं थी। तो मैंने एक लड़के को बुलाया और कहा, "तुम यह पतंग उड़ाओ।"

मैंने यह देख लिया कि पतंग कैसे उड़ाते हैं , और फिर पतंग उड़ाई। फिर मैंने सोचा, 'क्यों न मैं एक घिर्री ख़रीद लूं।' तो फिर मैंने घिर्री ख़रीद ली। दूसरे दिन जब मैंने पतंग उड़ाई तो पतंग मुझसे उड़ी ही नहीं।

फिर मैंने सोचा 'अगर मैं घिर्रियां बेचूं तो मुझे पैसे मिलेंगे।' मैंने ख़ूब सारी घिर्रियां खरीद लीं। पर मेरी एक भी घिर्री नहीं बिकी। तो इसलिए मैंने यह कहानी लिखी है।

❑ **अनिमेष पाठक, चौथी, भोपाल, म. प्र.**

अंधविश्वास

एक समय मैं गांव में खेल रहा था। तभी एक कौआ अचानक आया और मेरे सर पर चोंच मारकर चला गया। जब यह बात मैंने मां और दादी को बतलाई तो वो बहुत घबराईं और चिंतित होने लगीं। जब मैंने मां और दादी को चिंतित देखा तब मां से पूछा कि तुम इतनी क्यों घबराई हो?

तब मां ने मुझे डांट दिया और मुझसे कहा, "जल्दी स्नान करके आ जा और ब्राह्मण को कुछ दान कर दे।"

मैंने मां से कहा, "ब्राह्मण को दान करने से क्या होता है? यह जो ब्राह्मणों को देने का है, यह दान ग़रीबों में कर दूं, मां?"

तब मां ने फिर डांट दिया।

मैंने सोचा, 'दान नहीं करने से देखें क्या होता है' और मैं चुपके-चुपके वापस खेलने चला गया। जब मुझे मां ने घर पर नहीं देखा तो वे और दादी और भी चिंतित हुईं। जब मैं घर देर से पहुंचा तो मां और दादी ने बहुत डांटा और कहा कि स्नान करके आ। तब मैंने सोचा, 'स्नान नहीं करने से देखें क्या होता है?' मैंने उस दिन स्नान नहीं किया और मुझे कुछ नहीं हुआ।

तब मैंने अपनी मां से कहा, "तुम ऐसे ही घबरा रही हो। क्या हुआ मुझे?"

तब मां ने मुझे फिर डांट दिया और कहा, "अब तू तीन-चार रोज़ तक कहीं बाहर मत जाना।"

मैंने मां का कहना नहीं माना और बाहर घूमा। मुझे कुछ नहीं हुआ। तब मैंने अपनी मां से कहा, "तुम फालतू में चिंतित हो रही थीं। यह सब अंधविश्वास है।"

लेकिन मां ने मुझे फिर डांट दिया।

❑ **बृजकिशोर वर्मा, देवली, देवास, म. प्र.**

क्या हुआ पांव को?

एक आदमी सड़क पर जा रहा था। वह कुछ लंगड़ाकर चल रहा था। उसे दूर से दो मोड़े (लड़के) देख रहे थे। एक

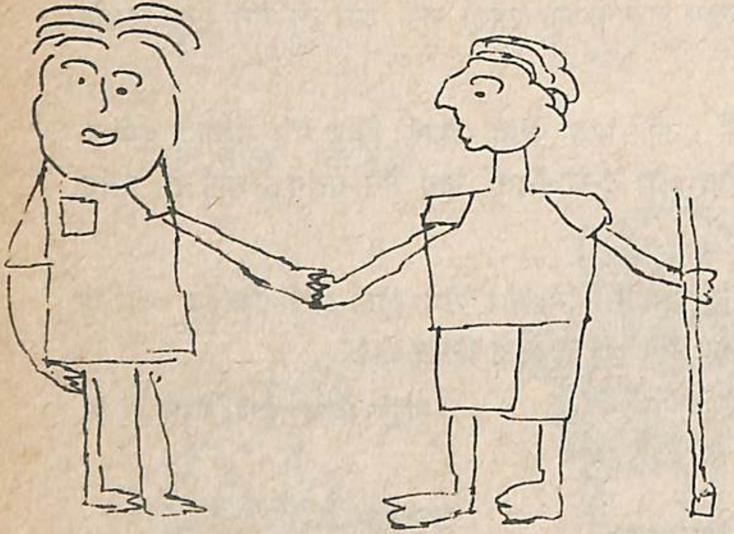

मोड़ा दूसरे मोड़े से बोला, "उस आदमी के पांव पर चोट लगी है।"

दूसरा मोड़ा बोला, "नहीं, उसके घुटने पर चोट लगी है।"

इस तरह उनमें बहस छिड़ गई। फिर एक मोड़ा बोला, "चलो हम उसके पास जाकर पूछ लें।"

फिर वे उसके पास चले गए। एक मोड़े ने पूछा, "क्यों भाई साहब, तुम्हारे पांव पर चोट लगी है?"

"नहीं," वह आदमी बोला, "मेरी तो चप्पल टूटी है।"

चित्र एवं कहानी ❑ दलजीत सिंह, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म. प्र.

बोर्ड परीक्षा

बात उन दिनों की है जब मैं कक्षा पांचवीं में पढ़ता था। परीक्षा के दिन आए। मैं पढ़ाई नहीं करता था। मुझे सब कहते थे कि, बोर्ड की परीक्षा बहुत कठिन होती है। मैंने सोचा कि नट बोल्ट की परीक्षा होगी। मेरे दोस्त भी कहते कि बोर्ड की परीक्षा है।

उन्होंने मुझसे कहा, "पाने लाए।"

मैंने कहा, 'क्यों?'

तो कहने लगे, 'नट बोल्ट कसने पड़ेंगे।'

मेरे अंकल की पाने की दुकान थी। मैं गया और पाने लेकर आ गया। परीक्षा हॉल में बैठ गया, तो मेरे सर ने कहा, "क्यों पेन-फुटे की जगह पाने क्यों लाया?"

मैंने कहा, "बोर्ड की परीक्षा है ना।"

उन्होंने कहा, "हां बोर्ड की परीक्षा है।"

"तो इसीलिए लाया हूं।"

उन्होंने मेरा कान पकड़ा और कहा, "जा जल्दी से पेन, फुटा लेकर आ।"

मैं गया और पेन फुटा लेकर आया और परीक्षा दी।

❑ संजय कुमार घोड़ेला, नौवीं, सांवेर, इंदौर, म.प्र.

कबड्डी के खेल में

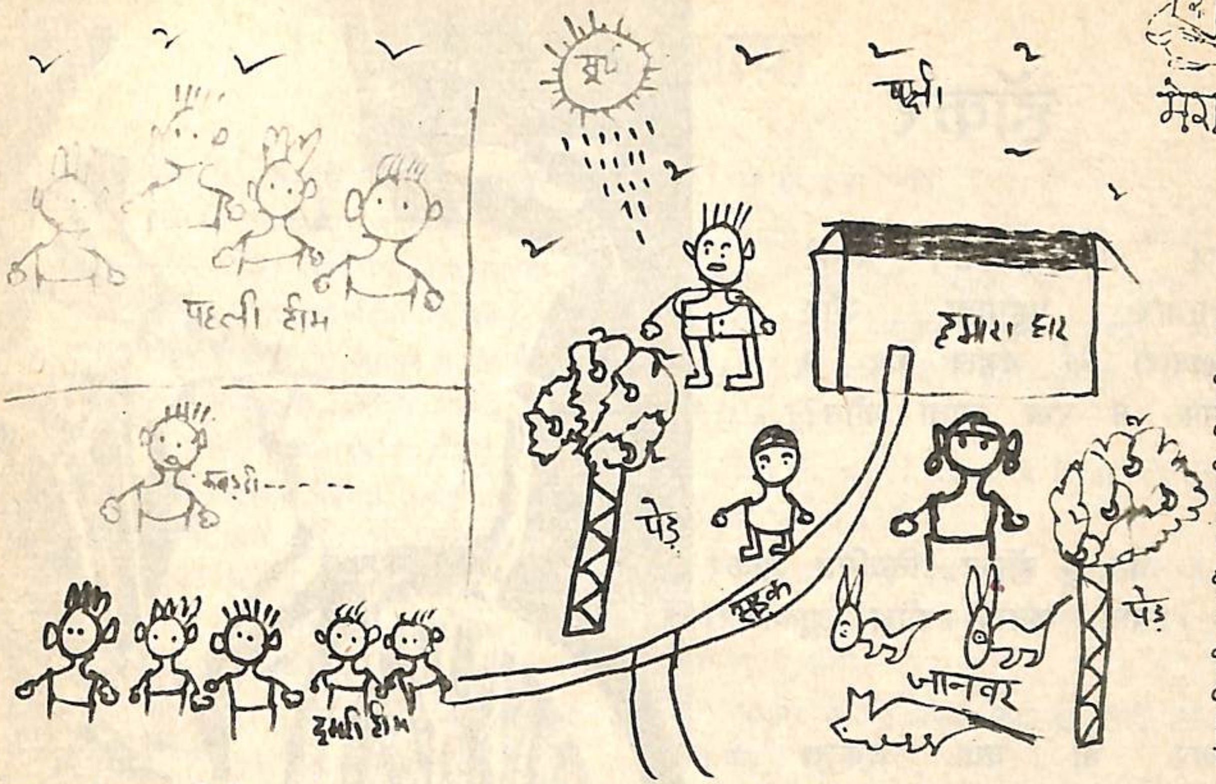

अंशुक तिवारी, आठवीं, राजाबरारी, टिमरनी, म.प्र.

बात उस समय की है जब मैं कक्षा पांच में पढ़ती थी। मेरा भाई कबड्डी खेलता था। एक बांर की बात है, वह कबड्डी खेल रहा था। मैं और मेरी सहेलियां भी खेल देखने वहां पहुंच गईं। मेरे भाई की टीम जीत रही थी। मैं बहुत ख़ुश थी। जब भी कोई दूसरी टीम का खिलाड़ी कबड्डी देने आता तो मेरा भाई उसे पकड़ लेता और टांग पकड़कर ख़ूब खींचता, जिससे बहुत-से खिलाड़ियों को चोट आई।

एक बार मेरा भाई कबड्डी देने गया तो दूसरी टीम के खिलाड़ियों ने उसे पकड़ लिया और उसकी दोनों टांगों को पकड़कर खींचने लगे। फिर उसे गिराकर उसकी पीठ पर बैठ गए। और उसकी ढोलक बजाने लगे। पैर खींचने के कारण उसका घुटना छिल गया और कपड़े गंदे हो गए। घर में उसे बहुत डांट पड़ी।

अगले दिन जब मैंने उससे पूछा, "भैया और कबड्डी खेलनी है?"

वह बोला, " न बाबा न। मैं घुटने और नहीं तुड़वाना चाहता।" उस दिन से उसने कबड्डी से तौबा कर ली।

❑ आरती तिवारी, सातवीं, राजाबरारी, टिमरनी, म.प्र.

चाय पीना मना है

मैं रोज़ सुबह-सुबह चाय पीता था
जब से सर ने बोला मुझसे
अब नहीं पीता चाय जबसे
चाय मुझे बहुत सताती है।
जब मुझको उसकी याद आती है
सारी उतावली, सारी परेशानी
न जाने कहां काफूर हो जाती है।
चाय मुझे बहुत सताती है।

❑ राजेश कुमार कुरमाले, रामबाबू कुमार गौर
सातवीं, बालागांव, हरदा, म.प्र.

हॉकर

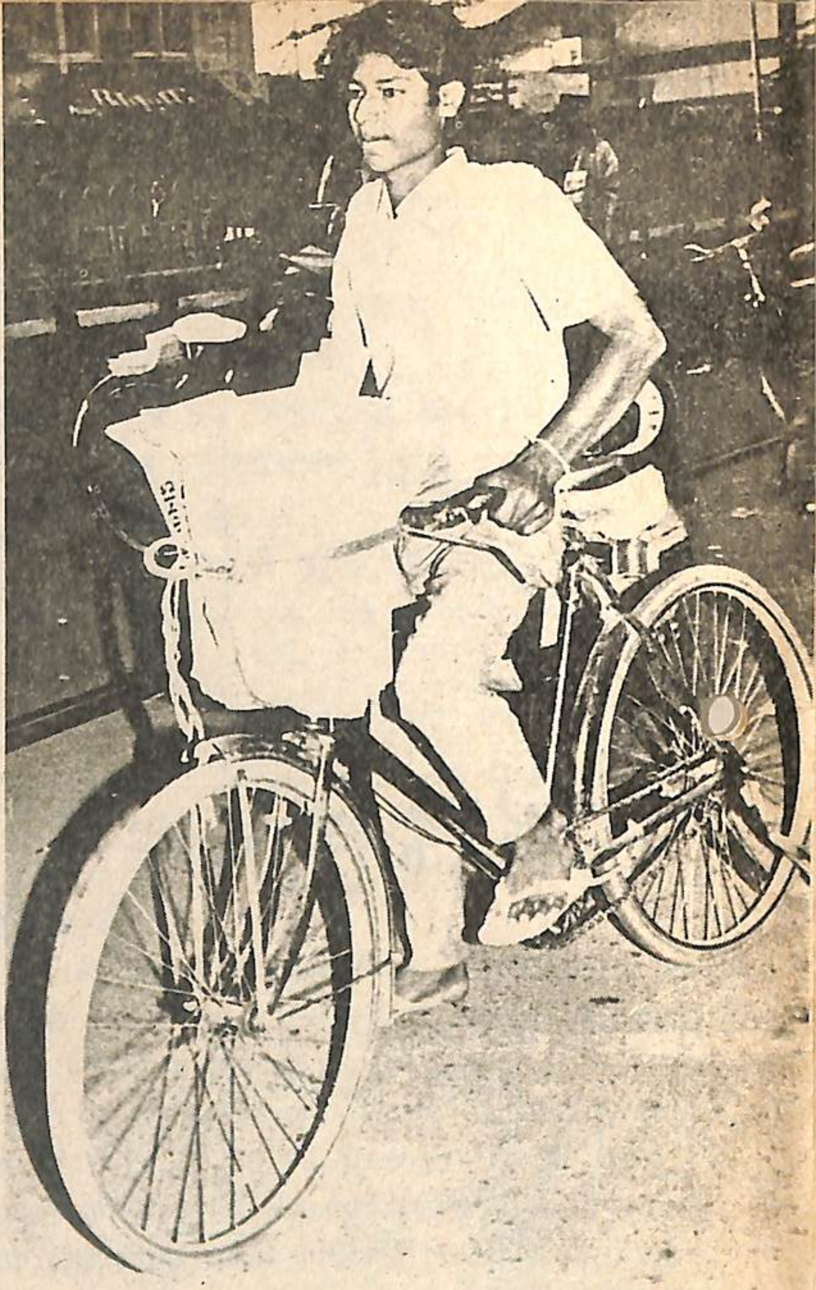

रोज़ सवेरे, नीम अंधेरे
समाचार पहुंचाता कौन
अख़बारों के बंडल घर में
चुपके से रख जाता कौन?

वह है हॉकर, नियमित आकर
बातें करता शीश झुकाकर।

हॉकर भी क्या देवदूत
या सांताक्लॉज़ सरीखा है,
प्रतिदिन यह उपहार बांटना
उसने किससे सीखा है?

कुछ शरमाकर कहता हॉकर
वह तो है जनता का चाकर।

सर्दी हो, गरमी हो चाहे
झड़ी लगी हो बारिश की,
श्रम ही उसका जीवन-दर्शन
फिर क्या मोल सिफारिश की!

ख़बर पठाकर, बिल थमाकर
लेता वाजिब पैसे हॉकर।

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी
फोटो: आर. सी. साहू

कूड़े की माया

तुम्हारी मुलाकात मैं एक बड़े ही रोचक व्यक्ति से करवाने जा रही हूं। उनका पूरा नाम तो गुम्माराजु राजराय राव है, लेकिन सब उन्हें राव साहब के नाम से जानते हैं। मूलतः कर्नाटक के रहने वाले राव साहब पिछले कई वर्षों से जयपुर में रह रहे हैं। वे अंग्रेज़ी के अध्यापक हैं, लेकिन उनकी सबसे मज़ेदार बात है उनके तरह-तरह के शौक़। वे और उनके पुत्र, महेश मिलकर विभिन्न प्रकार की चीज़ों का संग्रह करते हैं, जैसे माचिस की डिब्बियां, समुद्र में पाई जाने वाली कौड़ियां, कीमती पत्थर, चाबी के छल्ले... और हां, खोटे सिक्के भी! वे चिड़ियों, सांपों और तितलियों का अवलोकन करते हैं। पौधों से भी उनका बहुत लगाव है। तुमने बॉनसाई पेड़ों के बारे में सुना होगा। 'बॉन साई' जापानी कला है, जिसके द्वारा पेड़ों को गमलों में पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है। लेकिन पेड़ों का क़द छोटा ही रहता है। राव साहब के घर में 20 से 25 साल की उम्र के बरगद, गूलर, इमली आदि के पेड़ छोटे-छोटे गमलों में लगे हुए मिलेंगे। बेशक, इमली के पेड़ में इमली भी आती है!

अगर मैं बेलगाम इस तरह तुम्हें राव साहब के बारे में बताती चली गई तो पूरी चकमक भर जाएगी। इसलिए मैंने तुम्हारे लिए चुना है उनका एक ख़ास व महत्वपूर्ण शौक़। पढ़कर दंग रह जाओगे, इस बात का दावा है।

जब मैं पहली बार राव साहब से मिलने उनके घर गई, तो वे हंसते हुए बाहर आए और बड़े प्रेम से मुझे अंदर ले गए। दुबले-पतले, चेहरे पर हफ्ता भर पुरानी काली-सफ़ेद दाढ़ी, पर आंखों में चमक। उनसे दो बात करते ही मेरा संकोच काफूर हो गया।

जब मैंने उनसे उनके दिलचस्प संग्रहों के बारे में पूछना शुरू किया तो वे बोले, "संग्रह तो मेरे तमाम हैं, लेकिन मुझे सबसे प्रिय है मेरा कूड़ा संग्रह।"

जी हां कूड़ा संग्रह!

शायद मेरी सूरत उन्हें कुछ ज़्यादा ही मज़ाकिया दिखी होगी, क्योंकि फिर वे ठठाकर हंस पड़े, और मुट्ठी बांधकर दिखाते हुए बोले, "पिछले बाइस वर्षों में हमारे घर से इतना-सा कूड़ा भी बाहर नहीं फिंका है।"

मेरी तो बुद्धि ने जवाब दे दिया। मेरे मुंह से निकला, "क.. क्या..?"

"हां, हम घर का सारा कूड़ा घर में ही इस्तेमाल करते हैं।.......अच्छा ये बताओ, तुम कूड़ा किसे मानते हो?"

"बेकार चीज़ें-टूटी हुई, फूटी हुई, फटी हुई, जो काम की न रह जाएं।"

"लेकिन मैंने तो पाया है कि सब कुछ काम ही काम का है- केले के छिलके से लेकर फटी हुई कॉपी तक!" राव साहब मुस्करा रहे थे।

मैं अपने दिमाग़ पर ज़ोर डाल रही थी। कचरे के उपयोग के संदर्भ में मैंने कचरा फैक्टरी के बारे में ज़रूर सुना था। कभी-कभार रेल या बस सफर के दौरान किसी शहर के बीच से गुजरते हुए, शहर के बाहर दो-एक ऐसी फैक्टरियां देखी भी थीं- ऊंचे-ऊंचे कूड़े के अंबार और वातावरण में बदबू ही बदबू। मैं तो नाक दबाकर रह जाती थी। इससे ज़्यादा इस विषय पर कभी सोचा ही नहीं था। और फैक्टरी में जो संभव हो, वो घर में कहां?

लेकिन राव साहब का सोचना भिन्न है, "हम अपने घर का कितना ही 'कीमती सामान' कूड़ा मानकर बाहर फेंक देते हैं, और साथ ही अपनी गली व शहर में गंदगी फैलाते हैं।"

"लेकिन एक केले के छिलके या फटी कॉपी का हमारे लिए क्या अर्थ है? माना कि सब्ज़ी के छिलकों या किसी भी अन्य जैविक पदार्थ को मिट्टी में दबा दिया जाए तो धीरे-धीरे उसकी खाद बन

जाएगी। कागज़ को जलाने से उर्जा उत्पन्न होगी। लेकिन इससे हमें अपने घर के रोजमर्रा के कामों में क्या लाभ होगा?" मैंने कहा।

राव साहब बोले, "जब तुम्हें इस बात का अहसास हुआ है कि कूड़े में भी उपयोग की कोई चीज़ है तो आधा मैदान तो हमने मार ही लिया। बाकी की कहानी सिर्फ़ इतनी-सी रह जाती है कि हम 'कूड़े' का 'उपयोग' किस तरह करें? इसका माध्यम क्या हो?"

बात अब मेरी पकड़ में आने लगी थी। आओ राव साहब की बात को ठीक-ठीक पकड़ने के लिए हम एक छोटी लेकिन मज़ेदार क्रिया करें। हमें अपने घर से निकलने वाले कूड़े की सूची बनानी है :

-टूटी शीशी

-फटी कॉपी, किताब

-पुराना कपड़ा

-रोज़ सुबह झाडू में निकली धूल

-फूटा मटका, गमला

-टूथपेस्ट की खाली ट्यूब

-फल-सब्ज़ी के छिलके, चाय पत्ती

-बचा हुआ खाना

-पेड़ की सूखी पत्तियां

-बेकार टीन (कनस्तर आदि)

-टूटी चप्पल

-कंकड़, सींक, धागा

-टूटा पेन

-ब्लेड

आदि....आदि.......तुम इसमें और भी चीज़ें जोड़ सकते हो।

राव साहब ने इन वस्तुओं का वर्गीकरण करने पर पाया कि मात्र छह श्रेणियों में ये सभी समा सकती हैं। वे छह श्रेणियां हैं :

1. **जो सड़ाई जा सकें :** फल, सब्जी के छिलके, पेड़ की सूखी पत्तियां, धागा, चाय-पत्ती।
2. **जो जलाई जा सकें :** फटी किताबें-कॉपियां, पुराना कपड़ा (सूती), सींकें, डंडियां।
3. **बागवानी में काम आ सकें :** झाडू की धूल, फूटा मटका, गमला, कंकड़, पत्थर, राख।
4. **प्लास्टिक, रबड़ :** मंजन की ट्यूब का ढक्कन, पेन, हवाई-चप्पल।
5. **धातु :** टूथपेस्ट की ट्यूब, शीशी का ढक्कन, कनस्तर, ब्लेड, पेन की निब, तार।

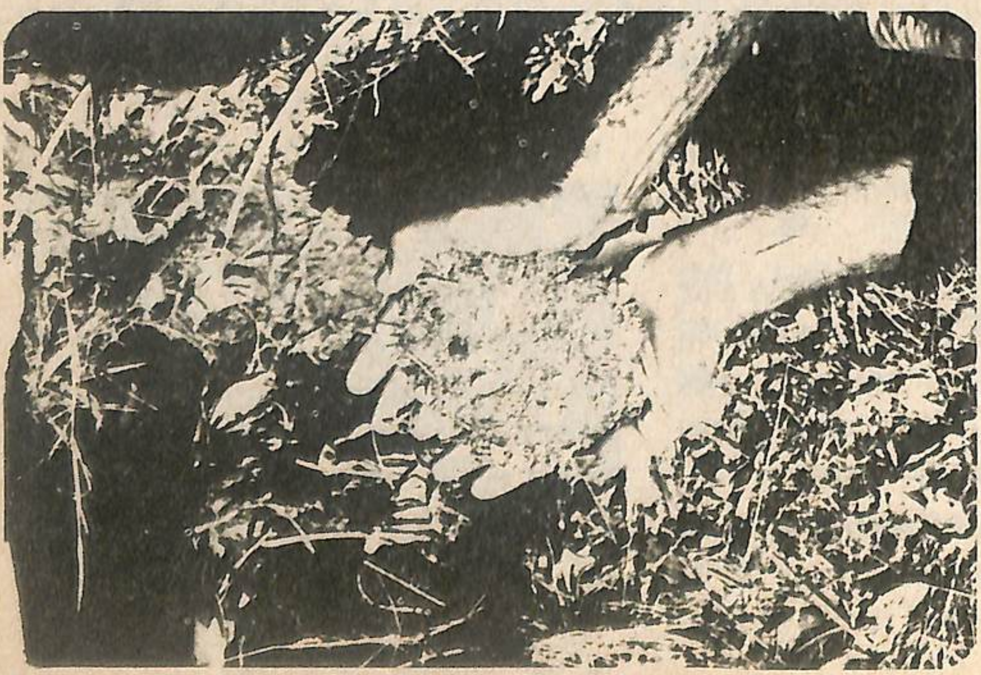

खाद का गड्ढा और खाद

6. कांच : टूटी शीशी।

राव साहब के बगीचे के कोने में एक 'कॉम्पोस्ट पिट' यानी खाद का गड्ढा है-6'×3'×3' फुट का। इस गड्ढे में श्रेणी **एक** का सारा कचरा डाला जाता है। हर तीसरे-चौथे दिन इस पर पानी का मामूली-सा छिड़काव कर देने से कचरे में कुछ बैक्टीरिया उत्पन्न हो जाते हैं जो सड़ाने की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। कचरे की परत एक फुट मोटी होने पर उस पर बगीचे की कुछ मिट्टी भुरक दी जाती है। तीन से चार महीने में सारा कचरा मिट्टीनुमा भुरभुरी खाद में बदल जाता है। इस तरह राव साहब अपने पौधों के लिए खाद अपने घर में ही बनाते हैं। यह खाद आम गोबर की खाद से ज़्यादा फायदेमंद होती है, क्योंकि इसमें एक नहीं, कई प्रकार के जैविक अवशेषों के अंश होते हैं। पका हुआ खाना जैसे बची-खुची साग, रोटी आदि खड्ड में नहीं डाली जाती, क्योंकि यह कीड़ों, कुत्तों आदि को आमंत्रित करता है। चाय की पत्ती भी वे छलनी में धोकर डालते हैं। बचा हुआ भोजन श्रीमती राव प्रेमपूर्वक अपने पंखों वाले और चौपाए मित्रों को खिलाती हैं।

तो इस तरह घर का आधे से ज़्यादा कूड़ा तो निपटा। अब चलें श्रेणी **दो** पर।

शोलापुर बॉयलर

राव साहब ने अपने आंगन में ले जाकर मुझे कांसे का बना अपना शोलापुर बॉयलर दिखाया। संयोग से वह उस समय चल रहा था। उनकी पत्नी पास रखी डलिया से पुराने पोस्टकार्ड, काग़ज़ आदि उठा-उठाकर उसमें डाल रही थीं। बायॅलर के निचले हिस्से में पानी गर्म हो रहा था। 'हमें सारे साल गर्म पानी से नहाने की आदत है।' श्रीमती राव ने ऐसा कहते हुए, एक पुरानी झाडू बॉयलर की अग्नि को समर्पित कर दी। फिर उन्होंने टोंटी खोलकर कुछ पानी निकाला, जिससे भाप उठ रही थी!

मेरे सामने तो मानो एक पर एक रहस्य खुलते जा रहे थे। अब आई श्रेणी **तीन।**

हम जा पहुंचे थे राव साहब के पौधों के बीच। पानी की तो हमारे देश भर में किल्लत है। फिर राजस्थान का तो और बुरा हाल! गर्मी के मौसम में तो दिन में दो बार पानी देने पर भी बेचारे पौधे मुंह लटकाए ही नज़र आते हैं। लेकिन जुलाई के माह में भी राव साहब के पौधे मुस्करा ही नहीं खिलखिला कर हंस रहे थे। राजस्थान में जुलाई में भी मई-जून जैसी ही गर्मी पड़ती है।

मेरा ध्यान क्यारियों की ओर गया, जिनमें साफ़-सुथरे ढंग से सूखी पत्तियों, फलियों, बीजों आदि की दो-तीन इंच मोटी परत बिछी हुई थी। इसे अंग्रेज़ी में मल्चिंग कहते हैं। राव साहब ने बताया कि यह परत कई काम करती है। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है। इस कारण गर्मियों में भी एक दिन में दो बार की बजाय केवल दो दिन में एक ही बार पानी देना पड़ता है। ठंड में यह परत जड़ों के लिए स्वेटर का काम करती है। फिर धीरे-धीरे गलकर यह परत खाद बनकर मिट्टी में मिलती जाती है। फूटे मटकों और गमलों को राव साहब छोटे-छोटे (नाखून के बराबर) टुकड़ों में तोड़कर पौधों की मिट्टी में मिलाते हैं। इससे मिट्टी जम नहीं पाती और जड़ों में हवा-पानी पर्याप्त मात्रा में पहुंचते रहते हैं। राव साहब भृकुटियां तानकर बोले, "कूटने का काम मैं गुस्सा आने पर करता हूं। गुस्से की ऊर्जा का सदुपयोग।" और हम खुलकर हंसे।

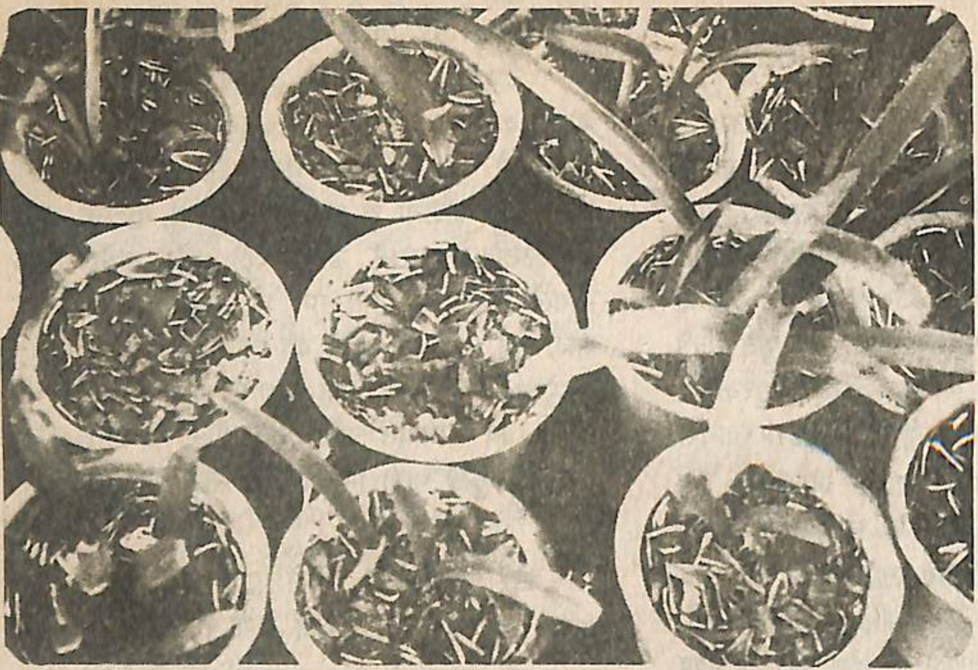

मल्चिंग का एक तरीक़ा यह भी है : चीनी मिट्टी के टूटे-फूटे मग, बर्तन आदि के टुकड़े गमलों में मिट्टी के ऊपर डाले जाते हैं।

बाकी तीन-श्रेणियों, यानि, **प्लास्टिक व रबड़, धातु** और **कांच** का घर में दुबारा उपयोग नहीं किया जा सकता। उनके बगीचे में तीन मटके रखे हैं। प्लास्टिक, कांच व धातु का बेकार सामान वे इन मटकों में इकट्ठा करते रहते हैं और जब कोई "टूऽऽ टा ऽऽ.. फू ऽऽ टा ऽऽऽ सा-ऽऽ मा ऽऽ न ऽ...." आवाज़ लगाता हुआ ठेला गुज़रता है तो वे मटकों को उस पर उलट आते हैं। उन्हें यह संतोष मिलता है कि कहीं न कहीं इसका दुबारा उपयोग होगा।

मुझे मालूम है कि तुम्हारा दिमाग़ दौड़ रहा होगा कोई ऐसा 'कूड़ा' तलाशने के लिए जो इन श्रेणियों से बाहर हो। सोचो.....ख़ूब सोचो! लेकिन-फिर उसका दुबारा उपयोग भी ख़ुद ही ढूंढ निकालना!

चलते-चलते राव साहब ने मुझे एक चमकीली मूरत दिखाई और पूछा, यह काहे से बनी होगी? बता सकते हो? यह साल भर की इकट्ठी हुई टूथ पेस्ट की ट्यूबों आदि से बनी थी। इन ट्यूबों का एल्युमिनियम गलाकर सांचे में ढलवाया गया था।

हालांकि कहानियां सबक़ सीखने के लिए नहीं हुआ करतीं। लेकिन इस कहानी को अगर हमने मात्र पढ़कर ही छोड़ दिया तो कुछ ठीक-सा नहीं होगा। कुछ राव साहब के, कुछ स्वयं के इजाद किए हुए तरीक़ों से अगर हम भी कूड़ा संग्रह शुरू करें तो कैसा रहेगा?

❑ स्मिता अग्रवाल

आंवला

कौन है ऐसा जिसने इस मौसम में आंवला नहीं चखा होगा। अपने बेहद खट्टे कसैले फलों के लिए मशहूर है आंवले का पेड़। मूल रूप से यह एशिया के शीतोष्ण भाग यानी ईरान, अफ़गानिस्तान जैसे देशों से भारत आया। पर यहां की आबोहवा इसके इतने अनुकूल निकली कि अब यह बहुत अधिक सर्दी वाले पहाड़ों के अलावा, देश में सभी जगह पाया जाता है।

आंवले का पेड़ मध्यम आकार का होता है। यह कलम और बीज, दोनों तरीक़ों से ही लगाया जा सकता है। कलमी पेड़ में फल ज़्यादा बड़े, गूदेदार होते हैं और लगते भी जल्दी हैं।

आंवले की पत्तियां पक्षियों के पर की तरह चिकनी, पतली और छोटी-छोटी होती हैं। पतझड़ में इसके लगभग सारे पत्ते झड़ जाते हैं। मार्च के महीने में इसमें बहुत हल्के–पीले, छोटे-छोटे फूल लगते हैं। फिर मई तक फल आते हैं जो नवंबर से अगले मार्च के बीच पकते हैं। पतझड़ में इस पेड़ की पत्तीहीन टहनियों पर केवल पके हुए फल लगे रह जाते हैं।

आंवले के फल पर खरबूजे जैसी धारियां होती हैं। कच्चा फल हरा और छोटा होता है। पकने पर इसका रंग पीला-सा हो जाता है। फल के अंदर कड़क बीज होता है। आंवले से अचार, चटनी, मुरब्बा आदि बनाया जाता है। कई प्रकार के रोगों में दवाई के रूप में भी यह काम आता है।

आंवले की लकड़ी से खेती-बाड़ी के औज़ार बनते हैं। इसकी पत्तियों को चमड़े की सफ़ाई के काम में लाया जाता है। रंगाई के काम में भी इसकी पत्ती, छाल और फल उपयोगी होते हैं।

कचरा सिर्फ़ कचरा नहीं है...!

कूड़ा, कचरा या कबाड़ा किस घर में नहीं होता! जात-पात, धर्म, रंग के पचड़ों से परे यह हर उस जगह मिलता है जहां आदमी रहता है। फ़र्क़ सिर्फ़ नज़रिए का है। हम किसे कूड़ा कचरा मानते हैं किसे नहीं, यह हमारे रहन-सहन, सोचने और चीज़ों के प्रति नज़रिए पर निर्भर करता है।

हो सकता है जो खज़ाना तुम अपनी पीठ पर लादे फिरते हो यानी बस्ते में छिपाकर रखते हो वह तुम्हारे माता-पिता आदि की नज़रों में केवल कबाड़ा हो।

जयपुर के राव साहब के बारे में तुमने इसी अंक में पढ़ा ही होगा। उनके लिए तो सचमुच ही कूड़ा किसी माया (धन) से कम नहीं है।

चकमक के पाठकों के लिए गुरूजी यानी विष्णु चिंचालकर जी का नाम नया नहीं है। गुरूजी कचरा या कबाड़ा समझी जाने वाली चीज़ों में भी 'कला' के दर्शन कर लेते हैं। अगर हम उनके नज़रिए से देखें तो हमें भी कचरे में कला के विभिन्न रूप दिखते हैं। कचरे और कबाड़ा चीज़ों से गुरूजी ने कई सुंदर कलाकृतियां बनाई हैं। इनमें से कुछ कलाकृतियों के चित्र 1987 में चकमक के पांच-छह अंकों में प्रकाशित हुए हैं। ऐसी ही एक कलाकृति का चित्र सामने के पृष्ठ पर देखो।

इसी तरह चकमक के पन्नों पर तुम बेकार या कबाड़ा वस्तुओं से छोटे-मोटे प्रयोग करने, खिलौने बनाने की जुगत पढ़ते ही रहते हो!

ये तो हुए कुछ ख़ास उदाहरण। लेकिन हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी कूड़े का सार्थक उपयोग करते हैं नज़र दौड़ाओ तो पाओगे कि फटे-पुराने कपड़ों से सुंदर कथरियां बनती हैं। इन्हीं कपड़ों की चिंदियों को बटकर और फिर उन्हें बुनकर सुंदर दरियां भी बनाई जाती हैं।

घर की साफ़-सफ़ाई में तो इन कपड़ों का उपयोग होता ही है।

रद्दी काग़ज़ से लिफ़ाफ़ा आदि बनाने का एक जाना-पहचाना उपयोग है। लेकिन इसी काग़ज़ को पानी में गलाकर सुंदर खिलौने, डलिया आदि बनाए जाते हैं।

टीन और प्लास्टिक के खाली डिब्बों, कांच की शीशियों का घर की रसोई में उपयोग सब जानते हैं। गमलों के रूप में भी तुमने इनका उपयोग देखा ही होगा।

अगर इस तरह नज़र दौड़ाने बैठें तो घर का हर कबाड़ा कुछ न कुछ काम का दिखेगा। तो सवाल है नज़रिए का!

इस सबके बावजूद कूड़ा-कचरा अपने आप में एक समस्या भी है। गांव के शांत और चमक-दमक विहीन वातावरण की अपेक्षा शहरों का, और ख़ासकर दिल्ली, मद्रास, बंबई, कलकत्ता, बंगलौर, अहमदाबाद, हैदराबाद, जैसे महानगरों का जीवन अलग तरह का है। कचरा यहां के लोगों के लिए एक बड़ी समस्या है। टीन, डिब्बे, बोतलें, प्लास्टिक, पौलीथीन, काग़ज़ आदि इतनी तेज़ी से घरों में जमा हो जाते हैं कि फेंकना ज़रूरी हो जाता है। शहर का जीवन जिस तेज़ गति से चलता है उसमें किसी के पास इतना समय नहीं है कि 'कूड़े की माया' या 'कचरे में कला' के नज़रिए से देख सके। लेकिन कूड़ा फेंके भी कहां। फेंकने के लिए भी जगह चाहिए और शहरों में खाली ज़गह या ज़मीन का मिलना तो और भी मुश्किल है।

यह समस्या जितनी विक़राल अपने देश के शहरों में है उससे कई गुना अधिक विकसित देशों के शहरों में है। प्रगति व विकास का एक अंदाज़ा आजकल इस तथ्य से लगाया जाता है कि शहरों में कितना कचरा पैदा हो रहा है।अगर हम अमेरिका की कुल आबादी और वहां प्रतिदिन पैदा होने वाले कुल ठोस कचरे की तुलनाकरें तो एक व्यक्ति के पीछे एक दिन में औसतन चालीस किलोग्राम से अधिक कचरा निकलता है। इसमें घर, बाजार, फैक्टरी आदि सभी जगह का कचरा शामिल है। जिस तरह अपने देश में विकास हो रहा है, उससे यह बात साफ़ है कि हम भी अन्य देशों की तरह अधिक से अधिक कचरा पैदा करने की ओर अग्रसर हैं।

अब सभी देशों में यह मान लिया गया है कि ठोस कचरे को रीसाइकिल किया जाना ही एक कारगर तरीक़ा है। तुमने अपने शहर या कस्बे में कचरा बीनने वाले, टूटा-फूटा सामान खरीदने वालों को देखा ही होगा। कभी सोचा है क्या करते हैं ये इस कचरे-कबाड़े का! असल में कांच, प्लास्टिक, काग़ज़, इस्पात, एल्यूमिनियम आदि को दुबारा इस्तेमाल करने यानी रीसाइक्लिंग के कुछ ख़ास तरीक़े विकसित किए गए हैं। ये तरीक़े क्या हैं आओ देखते हैं।

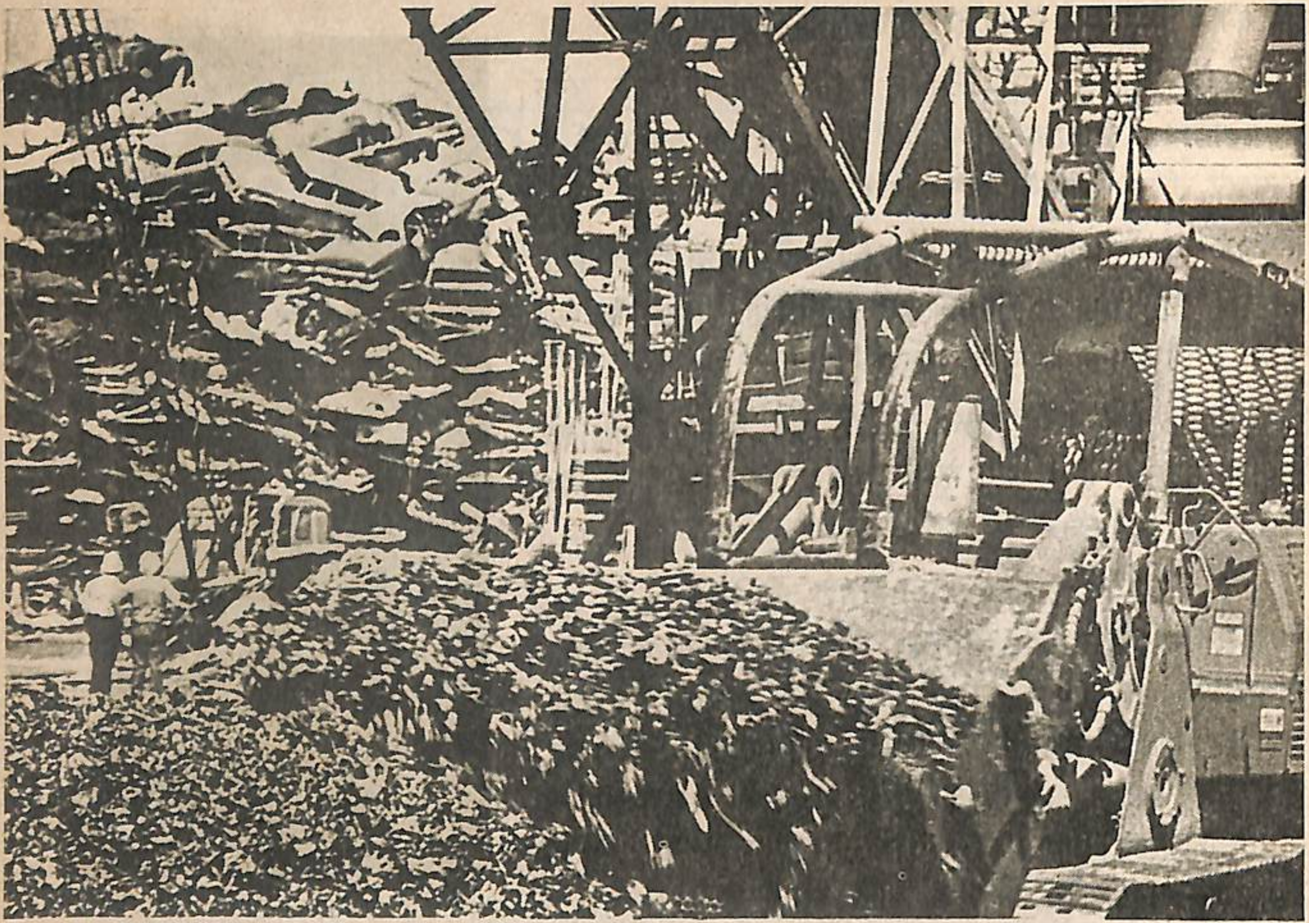

विदेशों में मोटर-कारों की तादाद इतनी अधिक है कि ख़राब होने के बाद एक ही तरीक़ा बचता है- उनके ढांचे और अन्य हिस्सों को पीसकर दुबारा इस्पात में बदला जाए।

रीसाइक्लिंग के तरीके

पुराने इस्पात को टुकड़ों में तोड़कर भट्टी में डाला जा रहा है, जहां इसे पिघलाकर दुबारा इस्तेमाल के लिए तैयार किया जाएगा। भट्टी में ले जाने वाली मशीन में विशाल विद्युत चुंबक लगा है, जो लोहे को खींचकर, भट्टी तक पहुंचाता है।

दिल्ली व बंबई जैसे महानगरों में कचरे से ऊर्जा व बिजली पैदा करने के प्लांट भी लगाए गए हैं। कचरे को जलाया जाता है और पैदा होने वाली गर्मी से बॉयलरों में रखा पानी गर्म किया जाता है। पानी गर्म होने से भाप बनती है और भाप से टर्बाइन चलती हैं, जिससे बिजली बनती है।

जमा हुए कचरे में से अलग-अलग पदार्थों से बनी चीज़ों को अलग करते हुए बच्चे। कई देशों में स्कूल के बच्चे इस काम में मदद करते हैं- यही उनका स्कूल का एक पाठ भी रहता है।

कचरे के ढेर में तरह-तरह की चीज़ें रहती हैं। लेकिन 1960 से 1986 तक आते-आते कचरे में प्लास्टिक की मात्रा 26 गुना बढ़ी है। प्लास्टिक को भी रीसाइकिल किया जाता है। बेकार प्लास्टिक को गलाकर, गर्मी और दाब से दुबारा चीज़ें तैयार की जाती हैं।

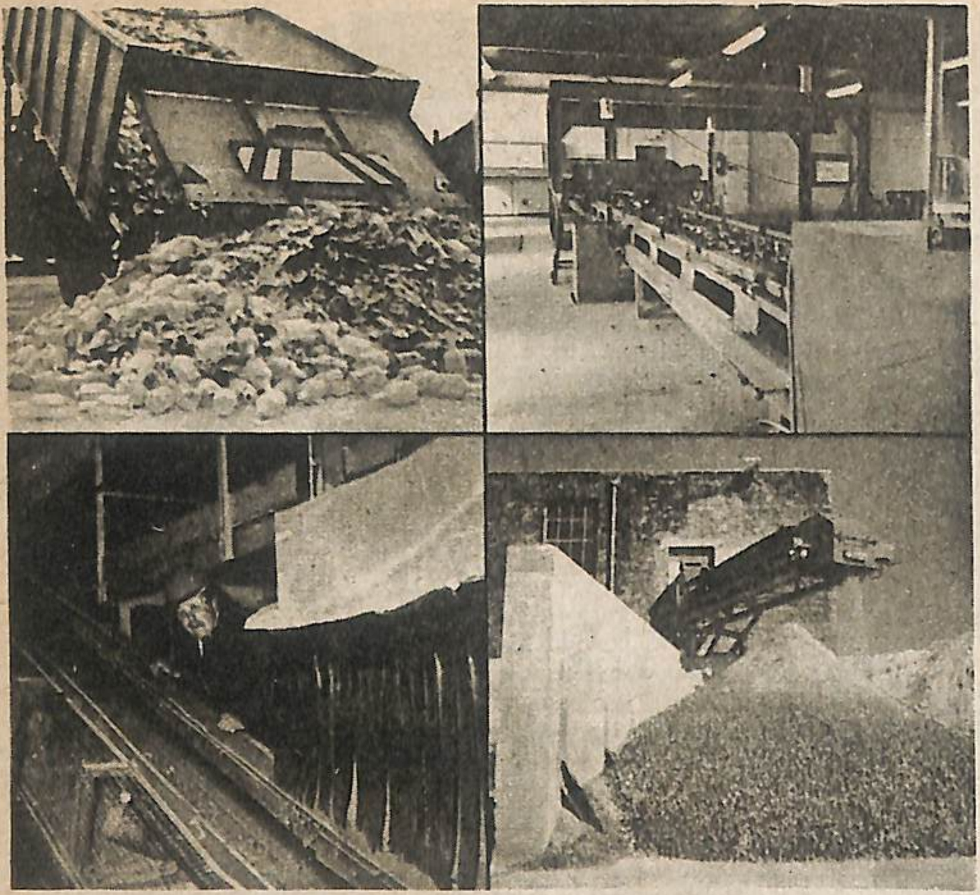

कांच की रीसाइक्लिंग। कचरा कांच ट्रकों में भरकर लाया जाता है। लंबी स्वचालित पट्टी पर डालकर इसमें से लोहे के टुकड़ों को चुंबक की मदद से अलग किया जाता है। बाकी कचरा हाथ से हटाया जाता है। फिर कांच को टुकड़ों में तोड़ा जाता है। अंत में बचे हुए कांच के टुकड़ों को पिघलाकर दुबारा चीज़ें बनांने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

घर में से निकलने वाले लगभग 85-90% कचरे की रीसाइक्लिंग हो सकती है। पुराने अख़बार व काग़ज़ के टुकड़े करके उसे पल्प में बदला जाता है, जिससे दुबारा काग़ज़ बनता है।

इस लेख में आए चित्र इंसायक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका; साइंस एंड इनोवेशन इंसायक्लोपीडिया; पापुलर साइंस से साभार।

खेल पहेली

यह आकृति सात टुकड़ों (पांच त्रिभुज, एक आयत और एक वर्ग) से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो! उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो (हल अगले अंक में)।

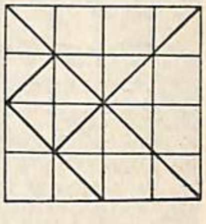

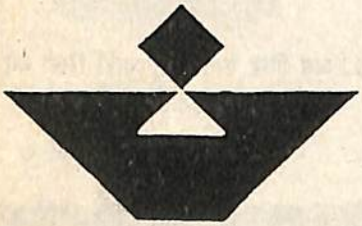

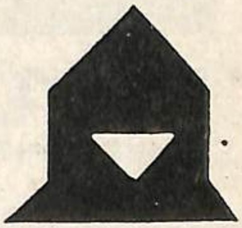

हल नवंबर, 92 अंक के

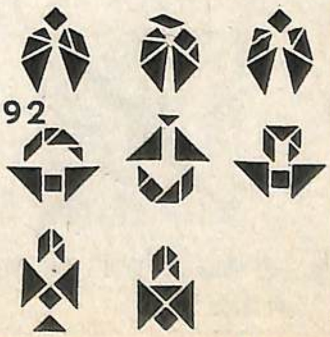

नाव

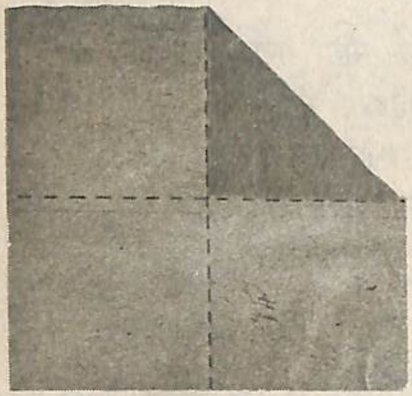

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़कर निशान बना लो। अब चित्र में दिखाए तरीक़े से मोड़ना शुरू करो।

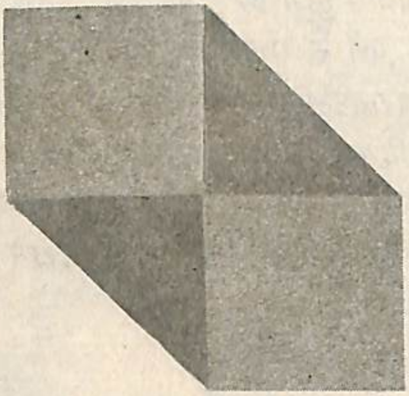

2. दूसरा सिरा भी मोड़ो, इस तरह।

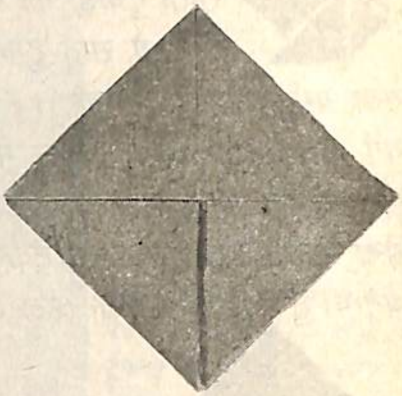

3. तीसरे और चौथे सिरे को भी बीच में मिलाओ। अब तुम्हारे पास फिर एक वर्गाकार आकृति है।

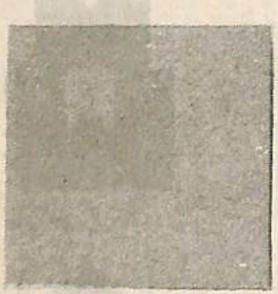

4. इस वर्गाकार आकृति को पलट लो। एक बार फिर चारों सिरे मोड़कर बीच में मिलाओ।

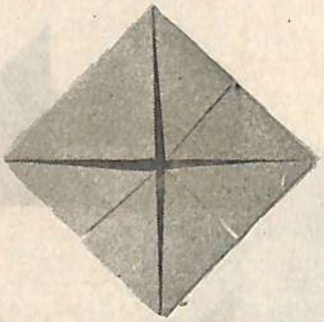

5. इस तरह। इस आकृति को भी पलट लो।

6. अब फिर एक बार, चारों सिरों को उसी तरह मोड़कर बीच में लाओ।

7. ऐसी आकृति मिलेगी। इस आकृति को पलट लो।

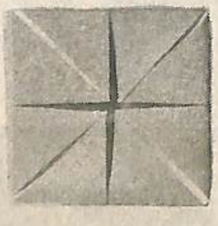

8. अब तुम्हारे पास जो आकृति है, उसमें एक बड़े वर्ग में 4 छोटे वर्ग हैं।

9. चित्र में दिखाए तरीक़े से एक वर्ग खोलो और उसे चपटा कर लो।

10. जिस वर्ग को अभी तुमने खोला है उसकी विपरीत दिशा वाले वर्ग को भी उसी तरह खोलकर चपटा कर लो।

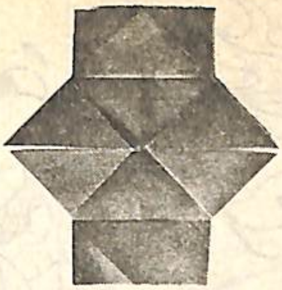

11. तुम्हें ऐसी आकृति मिलेगी। इसे बीच से मोड़कर दोहरा कर लो।

12. यह आकृति मिलेगी। चित्र 11 में दिखाई दे रहे बीच के दोनों वर्गों के खुले सिरे अंदर दब गए हैं। इन्हें खींचकर बाहर निकालो।

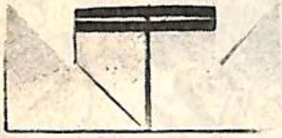

13. जो आकृति मिलेगी उसमें बीच में दिख रही पाइपनुमा रचना पर किसी दूसरे रंग के काग़ज़ के दो छल्ले बनाकर पिरो दो।

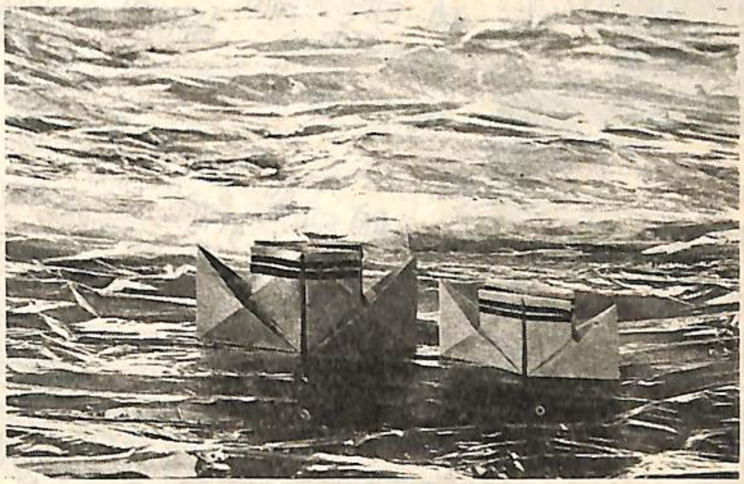

14. नाव तैयार है।

विज्ञान पहेलियां

(1)
वह सूरज की बेटी
और चंद्र की मां।
कहो किसे नारंगी-
की देते उपमा?

(2)
वह तेजपुंज, भू उसका
चक्कर सदा लगाए।
कहो कौन चंदा को
चांदी-सा चमकाए?

(3)
सूरत उसकी नीली-नीली
पर मन खाली-खाली।
सांझ सवेरे बोलो किसके-
मुंह पर छाती लाली?

(4)
नित्य नए रूप ले
रात को सजाता।
कहो कौन, माह में
एक छुट्टी पाता?

❑ जगदीश तोमर

पांच कवि

सूरज जलकर गर्मी देता
चंदा गलकर शीतलता
नदियां-झरने प्यास बुझाते,
पात-पात में कोमलता।

पौधे देते अन्न-फूल-फल,
बादल बरसाते पानी।
कौन रचा करता इन सबको,
होती मुझको हैरानी।

नन्हा शामू है
अम्मा से आ
मैंने रोप दिया
पेड़ उगेगा ज

पैसे खूब फल
भर जाएगा पैसे
भेद किसी से मत
मन में इसे छि

एक गिलहरी हंसकर बोली
सुनो मेमना भाई,
थोड़ा ऊन मुझे दे दो तो
दूंगी तुम्हें मिठाई।

पूंछ अगर दे दो तुम अपनी
ले लो ऊन हमारा,
तुम खाओ भर पेट मिठाई
मुझको पत्ता प्यारा।

ताएं

ह बमभोला,
चुपके बोला-
है पैसा,
मुन जैसा।

नेंगे ऊपर,
ों से घर।
यह कहना,
पाए रखना।

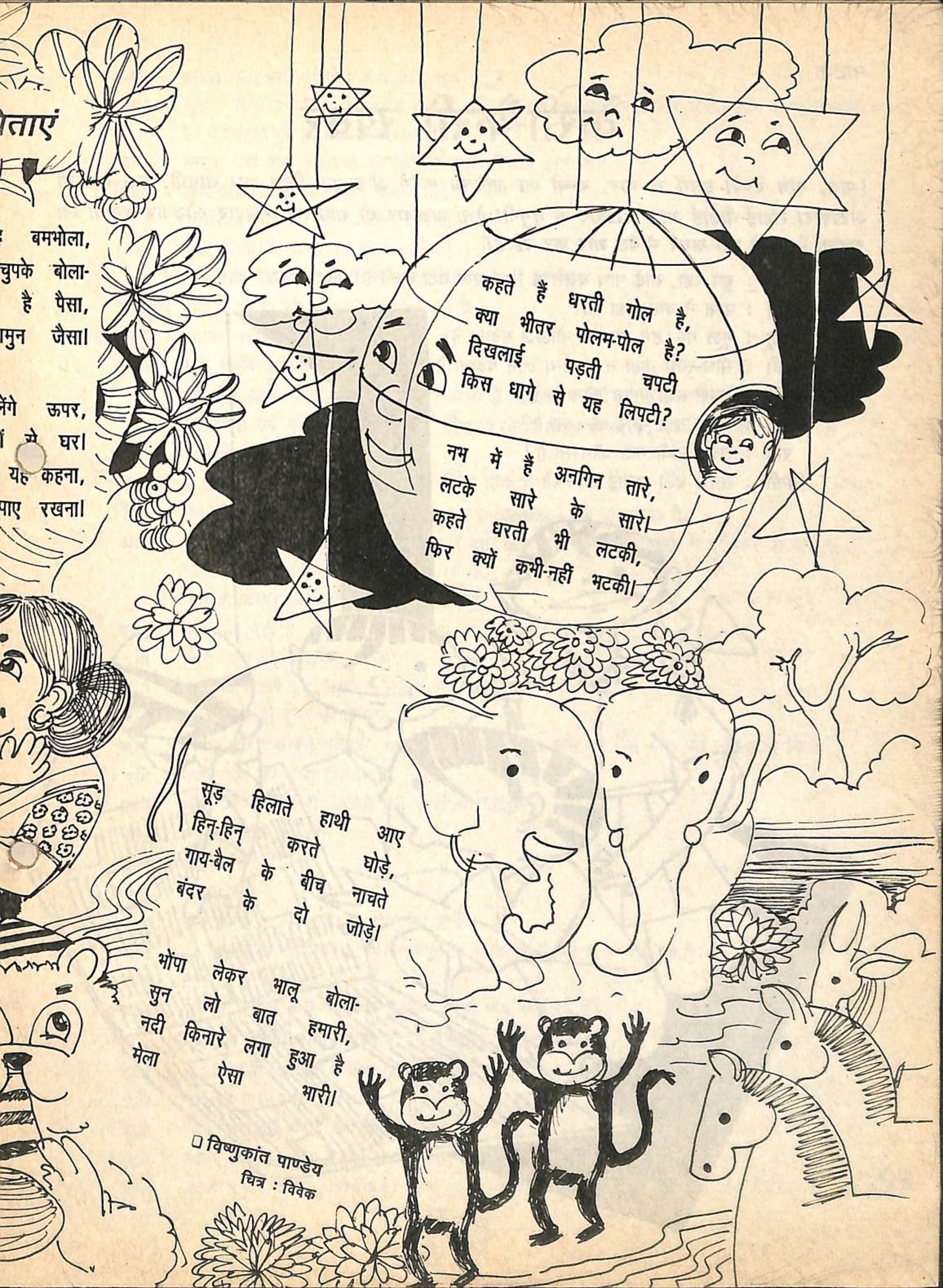

कहते हैं धरती गोल है,
क्या भीतर पोलम-पोल है?
दिखलाई पड़ती चपटी
किस धागे से यह लिपटी?

नभ में हैं अनगिन तारे,
लटके सारे के सारे।
कहते धरती भी लटकी,
फिर क्यों कभी-नहीं भटकी।

सूंड़ हिलाते हाथी आए
हिन्-हिन् करते घोड़े,
गाय-बैल के बीच नाचते
बंदर के दो जोड़े।

भोंपा लेकर भालू बोला-
सुन लो बात हमारी,
नदी किनारे लगा हुआ है
मेला ऐसा भारी।

□ विष्णुकांत पाण्डेय
चित्र : विवेक

कैसी-कैसी ख़बरें

[पात्र, पांच बच्चे। इनमें से चार, बच्चों का अभिनय करेंगे और एक पिता का। सामग्री, एक बड़ा-सा अख़बार। लंबाई-चौड़ाई आम अख़बार से दुगुनी। ऐसा अख़बार दो साधारण अख़बार जोड़कर बनाया जा सकता है। बच्चे एक कमरे में बैठे शोर कर रहे हैं।]

राजू : चुप रहो, साढ़े पांच बजने में सिर्फ़ एक घंटा बाक़ी है। पापा ने कहा था...

रवि : पापा ने क्या कहा था?

राजू : भूल गए, हमें जनरल नॉलिज बढ़ाना है।

पिंकी : सीधे-सीधे कहो न सामान्य ज्ञान बढ़ाना है।

रवि : सबसे बड़ा पहाड़ कौन-सा है?

अवि : सबसे बड़ा नगर कौन-सा है?

रवि : सबसे लंबी नदी कौन-सी है?

पिंकी : सबसे बड़ी लड़ाई कौन-सी व कहां हुई?

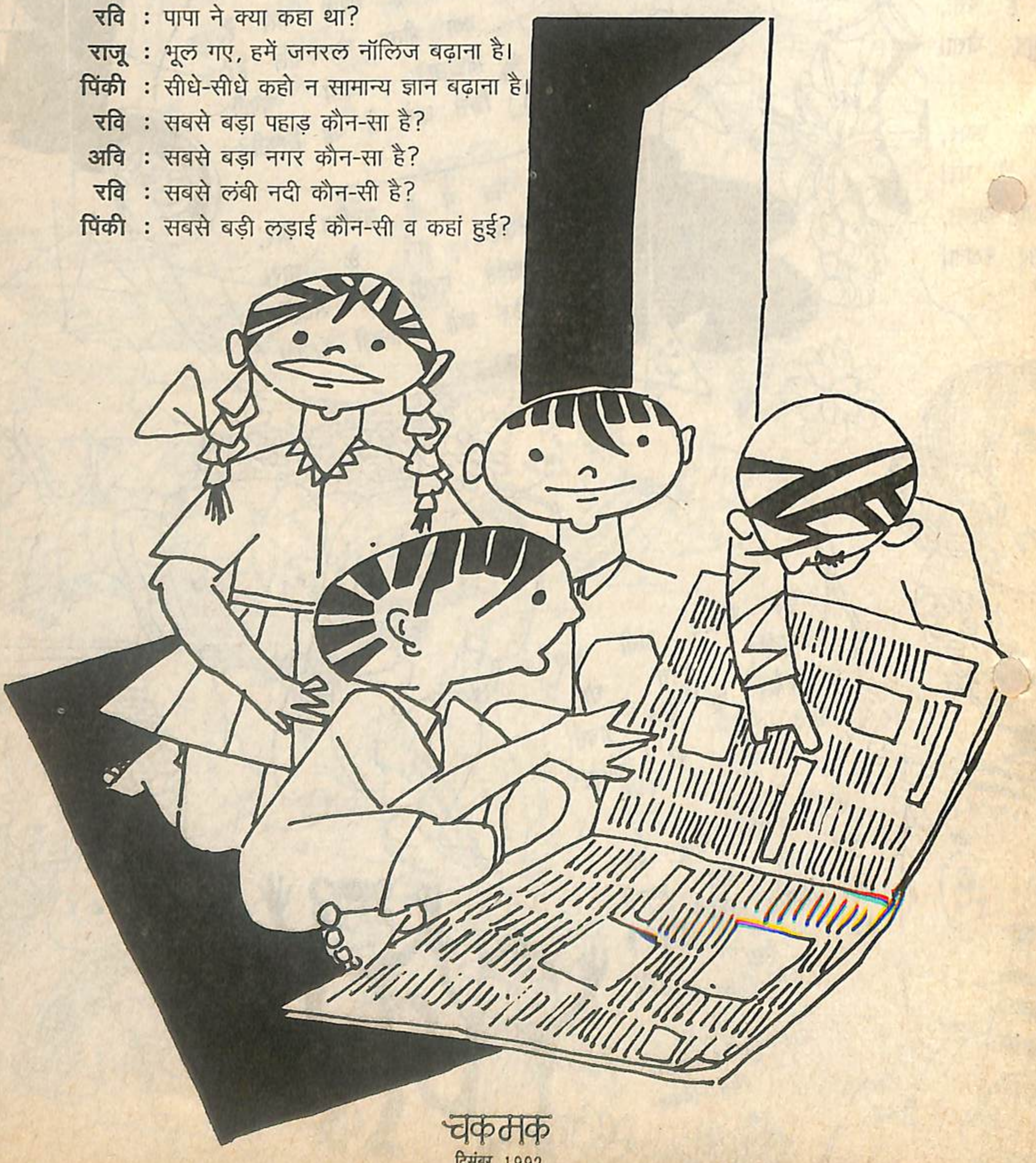

अवि : सबसे बड़ी रेल दुर्घटना कहां और कब हुई?

पिंकी : सुनो.. सुनो... पापा ने कहा था ***(पापा की नकल)*** समाचार पत्र पढ़ा करो। ज्ञान में वृद्धि होती है। देशकाल की जानकारी मिलती है।

राजू : हमारा देश कहां जा रहा है? विदेशी हमसे कितने आगे हैं?

पिंकी : अमेरिका मंगल पर मनुष्य कब उतारेगा?

राजू : अमेरिका शुक्र की ओर राकेट कब छोड़ेगा?

रवि : और पिंकी की चोटी चूहे कब काटेंगे?

[पिंकी रवि पर झपटती है। दौड़-भाग। फिर सभी शांत।]

राजू : पापा आते ही होंगे। हम अख़बार पढ़ते हैं।

सभी बच्चे : आओ अख़बार पढ़ते हैं।

पिंकी : भैया पहले अख़बार तो लाओ।

[रवि और अवि दोनों अख़बार लेकर आते हैं। अख़बार खोलते हैं। कभी सीधा। कभी उल्टा। बीच में बच्चों की नोक-झोंक। अख़बार बीच में बिछा दिया जाता है। बच्चे अख़बार पढ़ते हैं।]

पिंकी : राजू भैया! चश्मा ले आऊं?

राजू : मैं तो बिना चश्मे के पढ़ सकता हूं!

पिंकी : मैंने तो आज तक सभी को चश्मा लगाकर अख़बार पढ़ते हुए देखा है।

अवि : जा, ले आ चार चश्मे, एक दादी अम्मां का, एक पापा का, दो पड़ोस से मांगकर ले आ। तू तो चश्मा लगाकर बिल्ली जैसी लगेगी। म्याऊं... म्याऊं..।

[पिंकी झपटकर अवि के बाल पकड़ती है।]

राजू : क्या कर रही है, अख़बार फट जाएगा न!

रवि : जान जाए पर अख़बार न जाए!

अवि : पिंकी ज़रा परे हट अख़बार पढ़ना शुरू करते हैं।

रवि : पापा आते ही शुरू हो जाएंगे.....

अवि : ***(पापा की नकल)*** बताओ, हमारे मुख्यमंत्री ने इस माह कौन-से बांध का उद्घाटन किया?

रवि : कहां-कहां का दौरा किया?

अवि : मंत्री जी ने कौन-सी दुकान का उद्घाटन किया?

रवि : हज्जाम की!

पिंकी : दर्ज़ी की!

रवि : सब्ज़ी की!

राजू : चुप करो .... मैं पढ़ता हूं, तुम सब सुनो!

रवि : बा मुलाहिजा होशियार... मि. राजकुमार अख़बार पढ़ना शुरू कर रहे हैं।

राजू : सुनो... सुनो!

अवि : सुन तो रहे हैं, हम कौन-सा पट्टी पहाड़ा याद कर रहे हैं।

[कुछ क्षण चुप्पी। राजू अख़बार पर झुककर पढ़ रहा है।]

राजू : भ्रष्टाचार के आरोप में एक अफ़सर गिरफ़्तार।

रवि : नहीं तो क्या हम होंगे?

पिंकी : भैया भ्रष्टाचार क्या होता है?

अवि : काला बिजूका होता है। लंबे-लंबे दांत। लंबे-लंबे नाखून। ये लंबी जीभ।

राजू : बकवास बंद करो। ***(सोचकर)*** भ्रष्टाचार का अर्थ होता है- कुछ भी ग़लत काम करना।

पिंकी : अगर हम होमवर्क ग़लत करें तो क्या भ्रष्टाचार होगा?

राजू : उफ़! नही....नहीं! भ्रष्टाचार का मतलब है.... ग़लत तरीक़े से किया गया काम जैसे.....

रवि : मास्टर जी अपने बेटे को पूरा का पूरा पेपर आउट करवा देते हैं....

अवि : और वह फ़र्स्ट आ जाता है।

राजू : बिल्कुल ठीक। लगता है, आज तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल ठीक काम कर रहा है। क्यों पिंकी समझ गईं?

पिंकी : हां... हां आगें पढ़ो।

राजू : अच्छा दूसरा समाचार पढ़ते हैं। प्रधानमंत्री विदेशी दौरे पर। अमेरिकी प्रतिनिधि मंडल की भारत यात्रा। चीन के विदेश मंत्री पाकिस्तान रवाना। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अरब देशों की ओर।

रवि : वो आया, वो गया। हमें क्या-कोई कहीं जाए, चाहे आए।

पिंकी : भैया! किसी के आने-जाने से हमारा सामान्य ज्ञान क़ैसे बढ़ता है?

राजू : ज्ञान बढ़े, चाहे घटे-मैं तो अख़बार में जो लिखा है वही पढ़ रहा हूं। अच्छा, अब दूसरा पेज.....

[चारों मिलकर अख़बार का पृष्ठ उलटते हैं।]

रवि : अब शंहशाए आलम अख़बार पढ़ेंगे।

अवि : हमें हर काम मिलजुल कर करना चाहिए।

पिंकी : रवि भैया अख़बार पढ़ना तो आता है?

रवि : ओ पिद्दी। चुप रह। पूरा कामिक्स आंख बंद करके एक ही सांस में पढ़ लेता हूं।

[तीनो हंसते हैं।]

रवि : ***(खिसियाकर)*** उफ़्! इस पेपर में विज्ञापन भरे पड़े हैं।

राजू : कुछ तो पढ़ो। न मालूम पापा कहां से पूछ लें!

रवि : बिकाऊ है- पच्चीस वर्षीय युवक। सुंदर सुशील। बी.ए. फ़ेल। घर का धंधा। संपर्क करें।

राजू : अरे, लड़का कहीं बिकाऊ होता है!

रवि : देख लो, लिखा है।

[सभी नीचे झुककर पढ़ते हैं। एक दूसरे की ओर देखकर मुंह बिचकाते हैं।]

रवि : न मिडिल, न मैट्रिक, सीधे बी.ए. पास कीजिए। हमारा विद्यालय आपको डिग्री दिलाने की गारंटी लेता है।

पिंकी : ठीक है। हमें वहीं चलना चाहिए।

अवि : रोज़-रोज़ पढ़ने की किटकिट से छुटकारा।

राजू : बेकार की बातें छोड़ो। पापा के आने का समय हो रहा है।

अवि : ***(बूढ़े की आवाज़)*** अरे भई मेरा चश्मा कहां है? ज़रा मैं भी पढ़ूं।

रवि : सुनो! प्रिय राजू! लौट आओ।

तीनों बच्चे : प्रिय राजू लौट आओ! राजू तो यहीं है।

रवि : आगे सुनो।

पिंकी-अवि : क्या सुनें?

रवि : लिखा है.... तुम्हारी मम्मी बहुत याद कर रही है। तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। ढूंढकर लाने वाले को एक हज़ार रुपए दिए जाएंगे।

पिंकी-अवि : पूरे हज़ार रुपए.... अभी हमें चलकर इस लड़के की खोज करनी चाहिए।

रवि : जी भर कर गोल-गप्पे खाएंगे।

पिंकी : मैं तो आइसक्रीम खाऊंगी। राजू तुम क्या खाओगे?

राजू : तेरा सिर। चल हट। बेकार की बातों में उलझकर समय बरबाद मत करो। अभी हमें कुछ भी याद नहीं हुआ।

पिंकी : हुआ कैसे नहीं... पूरे एक हज़ार रुपए!

अवि : हज़ार रुपए जेब में हों तो सामान्य ज्ञान अपने आप बढ़ जाता है।

पिंकी : पापा भी रोज़ कहते हैं, आजकल आदमी की नहीं, रुपयों की पूछ है।

अवि : हमारी जेब में रुपए होंगे तो पापा भी हमारी पूछ करेंगे।

राजू : *(चिल्लाकर)* चुप करो। सुनो।

[राजू वापस रवि को दूर हटा अख़बार पढ़ने लगता है]

अवि–रवि : हाय, हमारे हज़ार रुपए!

राजू : ट्रक ने चार को कुचला। ड्राईवर फ़रार। बस-रेल दुर्घटना में पचास मरे। बीस घायल।

पिंकी : कुचले जाने पर कितना दर्द होता होगा!

अवि : भैया! घायल लोगों के शरीर से कितना ख़ून बह जाता होगा!

रवि : उस दिन स्कूल के सामने सड़क पर एक साइकिल वाले को कार ने टक्कर मार दी। बिचारा गिर पड़ा। मुंह से ख़ून बहने लगा था.... उफ़्! मुझ से नहीं देखा गया। पूरे दिन उसका चेहरा आंखों के सामने घूमता रहा।

पिंकी : कार वाले को लोगों ने पकड़ा नहीं.... मैं होती तो उसके बाल नोच लेती।

रवि : कार वाला, कुछ देर रुका, फिर चला गया। लोग कह रहे थे, वह कोई बड़ा आदमी था।

अवि : बड़े आदमी का कोई कुछ नहीं कर सकता?

पिंकी : वह चाहे जिसे टक्कर मार सकता है!

अवि : चाहे जिसे अपनी कार से कुचल सकता है!

रवि : वहां खड़े कुछ लोगों ने कहा भी कि हमें कार का घेराव कर पुलिस के हवाले कर देना चाहिए।

[सभी रवि के चेहरे की ओर एकटक देख रहे हैं।]

रवि : दूसरे लोगों ने कहा-कौन आफ़त मोल ले। साला बिना बात हमें फंसा देगा।

[कुछ क्षण चुप्पी।]

राजू : ***(अख़बार पढ़ता है)*** हत्यारा बाइज़्ज़त बरी। गवाह के अभाव में चोर छूटा। अफ़सर की मिली भगत से बैंक में लाखों का गबन। रिश्वत लेते इंजीनियर गिरफ़्तार।

तीनों बच्चे : बस करो।

पिंकी : कोई अच्छी-सी ख़बर पढ़ो न!

रवि : हत्या, लूट, चोरी, रिश्वत, गबन, क्या इन ख़बरों से हमारा सामान्य ज्ञान बढ़ेगा?

राजू : मैं भी यही सोच रहा हूं। पर अख़बार में जो लिखा है वही तो पढूंगा।

[राजू अख़बार का पृष्ठ उलटता है।]

राजू : अमेरिका परमाणु बम अपने मित्र देशों को देगा।

पिंकी : हमारे देश को भी।

रवि : परमाणु बम न हुआ लड्डू हो गया। एक मुझे दे दिया, दूसरा तुझे दे दिया। अरी अक्ल की दुश्मन, अमेरिका अपने दोस्तों को परमाणु बम देगा।

अवि : दोस्तों को क्यों देगा?

राजू : दुश्मनों पर हमला करने के लिए।

पिंकी : हमला करने से क्या होगा?

अवि : भैया परमाणु बम से ही हमला क्यों होगा?

रवि : बंदूकों, टैंकों, आदि से हमला किया जा सकता है।

राजू : परमाणु बम से एक साथ लाखों लोग मारे जा सकते हैं।

तीनों बच्चे : लाखों लोग।

राजू : हां, एक साथ लाखों लोग।

[कुछ क्षण चुप्पी।]

राजू : पूरा का पूरा शहर जल कर राख हो जाएगा।

तीनों बच्चे : पूरा का पूरा शहर!

पिंकी : हमारा स्कूल भी?

राजू : हां।

पिंकी : हमारे मास्टर जी भी?

राजू : हां।

रवि : आदमी का तो पता भी नहीं चलेगा!

राजू : सब कुछ एक मिनट में हो जाएगा।

अवि : इससे बम डालने वाले देश को क्या मिलेगा?

रवि : राख का ढेर।

पिंकी : भैया! सभी परमाणु बम इकट्ठे करके समुद्र में डाल देने चाहिए।

[राजू धीरे-धीरे सिर हिलाता है।]

अवि : उस समय हम न जाने कहां होंगे?

रवि : दिन का समय होगा तो स्कूल में, शाम हुई तो खेल के मैदान में और रात हुई तो घर में।

अवि : पलक झपकते ही हम राख हो जाएंगे।

पिंकी : उफ़! मैं आंखें बंद कर लूंगी।

[सभी बच्चे आतंकित। पापा का प्रवेश। वे सबके गुमसुम चेहरे देखते हैं।]

पिंकी : पापा परमाणु बम से हम जल कर राख हो जाएंगे? कोई नहीं बचेगा? मैं भी नहीं....

[पिंकी सुबकने लगती है। पापा उसे गोद में उठा लेते हैं। एक हाथ से अख़बार लेकर कोने में पटक देते हैं।]

❑ **योगेंद्र दवे**

माथापच्ची : हल नवंबर, 92 अंक के

1. पहले दिन उस व्यक्ति ने 4 केले खाए।

2. 3 बजकर 33 मिनट। 3.

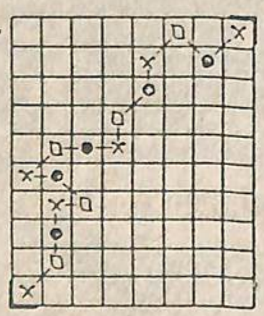

4. कम-से-कम तीन रंग।

5. शुभा ने पचास पैसे के 2, पच्चीस पैसे के 12 तथा चालीस पैसे के 5 टिकट दिए।

6. खाना नं. 3

7. दशमलव का चिन्ह। 2.3, 2 से बड़ी है पर 3 से छोटी।

सोचकर जवाब दो

1. असल में हर गेंद आधी काली और आधी सफ़ेद है।

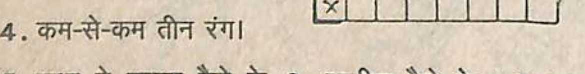

2. 8 का आधा 0 है!

3. मैं जीती।

वर्ग पहेली-18 का हल

1 कुं	2 ज	■	3 बु	4 घ	■	5 फि	6 क्र
■	8 या	न	■	9 क	10 स	■	य
11 बा	■	12 फा	13 ग	■	14 गा	15 ल	■
16 म	17 ति	■	18 ऊ	19 ख	■	20 क्ष	21 मा
■	22 ले	23 त	■	24 ता	25 ले	■	त
26 वि	■	27 ल	28 घु	■	29 हू	30 क	■
31 का	32 मा	■	33 न	34 मी	■	35 ब	36 टा
37 र	ह	स्य	■	38 रा	त	■	ल

वर्ग पहेली-18 के सर्वशुद्ध हल इन पाठकों ने भेजे :
वीरेंद्र साहू, भारती साहू, इंदागांव, रायपुर। मनोज यादव, खवासा, सिवनी। अनिल यादव, सरकंडा; लक्ष्मणसिंह क्षत्री, कोरजा; मनीष यदु, कोरकोमा; आशीष वैष्णव, कटघोरा, बिलासपुर। राकेश पुरी, अंबिकापुर; आर. डी. सिंह, सोनहन, सरगुजा। जितेंद्र शर्मा, बरकाखापा, छिंदवाड़ा। टीकमसिंह पोर्ते, देवगढ़, रायगढ़। किरण मार्कंडेय, गुदुम, दुर्ग। निक्की राठौर, नेहा शुक्ला, भौंरा, बैतूल। **सभी म.प्र.।** संदीप वर्मा, ललित कुमार, गुड़गांव, **हरियाणा। इन सभी को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।**

क्यों.... क्यों : 26

मुनिया का अपनी सहेली से झगड़ा हो गया। झगड़े का कारण थी **'जूं'**। हां 'जूं' ही। शायद दोनों ने चकमक का नवंबर, 92 का अंक एक साथ बैठकर पढ़ा था। 'कीड़ों की निराली दुनिया' में जूं के बारे में भी दिया है।

दोनों में झगड़ा इस बात पर है कि मुनिया की सहेली कहती है, जूं पसीने से पैदा होती हैं। मुनिया कहती है, पसीने से कैसे पैदा होंगी?

मुनिया की सहेली का कहना है कि **यदि जूं पसीने से पैदा नहीं होती तो फिर ऐसा कहा क्यों जाता है**?

हम भी यही सोच रहे हैं कि क्यों कहा जाता है? तुम भी सोचो, पता करो, खोज करो और अपने जवाब हमें **15 फरवरी, 1993** तक भेज दो।

क्यों.. क्यों.. 21 : लांघकर जाने से कुछ नहीं होता!

जुलाई, 92 के अंक में क्यों....क्यों... 21 का सवाल था **कि क्या सचमुच किसी को लांघकर जाने से या किसी के पैरों के नीचे से निकलकर जाने से क़द पर कोई प्रभाव पड़ता है?**

इस सवाल के जवाब हमें कई पाठकों ने भेजे हैं। ज़्यादातर ने यही लिखा है कि किसी को लांघकर जाने से क़द पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मना शायद इसलिए करते हैं कि कुछ लोगों को अपने रहन-सहन के सामान्य तौर तरीक़ों में यह अच्छा नहीं लगता। कुछ ने लिखा है कि पैरों में लगी गंदगी वगैरह दूसरे के सिर पर गिर सकती है।

कक्षा पांच की छात्रा **कविता चौरसिया** ने पौंडी उपरोड़ा, बिलासपुर से लिखा है कि, *"किसी को लांघकर जाने से या किसी के पैरों के नीचे से निकलकर जाने से क़द पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हमारी नानी कहा करती थीं कि प्रत्येक शरीर में ईश्वर का निवास होता है। अतः ईश्वर के प्रति सम्मान प्रगट करने के लिए ये नियम बनाए गए थे। किंतु मां का कहना है कि परिस्थिति के अनुसार दूसरे के कष्ट का ध्यान रखते हुए नियम बदले जा सकते हैं। लकीर का फ़कीर बनना कदापि उचित नहीं।"*

> ***ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दक़ियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।***

इसी तरह छपड़ौर, शहडोल से **कुबेर शरण द्विवेदी** ने लिखा है कि, *"मेरे ख्याल से तो इसका क़द पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मेरे यहां पर भी ऐसी धारणाएं प्रचलित हैं। मैं तो कई बार पैरों के नीचे से निकला, परंतु मैं तो उम्र के हिसाब से बढ़ रहा हूं। मुझ पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।"*

हमारा भी यही कहना है कि लांघकर जाने से क़द पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

इन पाठकों ने जवाब भेजे :

बृजलाल सिंह क्षत्री, खोंगसरा, बिलासपुर। सुरेश चंद्र रावत, लहर्रा मुरैना। सत्येंद्र सिंह रघुवंशी, हरदा। विजय किशोर जायसवाल, हाटपिपल्या, देवास। मोहन सिंह गहलौत, पराग सिंह गहलौत, काजल सिंह, शुजालपुर मंडी, शाजापुर। धर्मेन्द्र जायसवाल, हाटपिपल्या, देवास। सभी **मध्यप्रदेश**। सुगनराम गौड़, ललित भाटी, अनुराग बी. शर्मा, प्रेमसिंह देवड़ा, प्रमोद गौड़, सुरेश कुमार पिलोवनी, दिलीप सिंह, राजुदास वैष्णव, सभी विधावाड़ी, देसूरी, पाली। हरिसिंह राठौर बालियाना, बाड़मेर। सभी **राजस्थान**। मनोज कुमार मिश्र, पूरे नैपाल मिश्र, फ़ैज़ाबाद। गजराज, नरेंद्र पाल, हीरालाल, उदयराज, हरदोई, सभी **उत्तर प्रदेश**। निर्मल कुमार गोयल, प्रेम कुमार, पटना, **बिहार**।

दस पैसे का नया
सिक्का : 2 ग्राम

पच्चीस पैसे का
पुराना सिक्का
: 2.5 ग्राम

पच्चीस पैसे का
नया सिक्का (गेंडेवाला)
: 3 ग्राम

पचास पैसे का
पुराना सिक्का : 5 ग्राम

एक रुपए का
नया सिक्का : 6 ग्राम

स्प्रिंग चूड़ी का तराजू

छोटी-छोटी चीज़ों का वज़न जानने, पता लगाने के लिए तुमने अगस्त' 92 अंक में पोस्टकार्ड तुला बनाई थी। चलो इस बार एक और तराजू बनाते हैं जो 10 ग्राम तक का वज़न तौल सकती है।

इस तराजू को बनाने के लिए पहले **यह सामान जुगाड़ो**-प्लास्टिक की छल्ला चूड़ी (जिसमें लगभग बारह चूड़ियां एक साथ जुड़ी हों।), माचिस की एक ख़ाली डिब्बी, सींक वाली झाड़ू की एक सींक, धागा, लकड़ी का फुटा या उतना ही बड़ा लकड़ी का सीधा टुकड़ा, कोरा कागज़, पेंसिल, दस, पच्चीस, पचास पैसे और एक रुपए के सिक्के।

प्लास्टिक की छल्ला चूड़ी बाज़ार में किसी भी चूड़ी की दुकान पर आसानी से मिल सकती है। चूड़ी के एक सिरे पर चित्र में दिखाए तरीक़े से सींक बांध लो। माचिस की डिब्बी में से अंदर वाली दराज निकालो और उसमें चारों कोनों पर छेद कर लो। इन छेदों में धागे बांधो। फिर चारों धागों को एक धागे के बीच में बांध लो। अब चूड़ी में बंधी सींक के

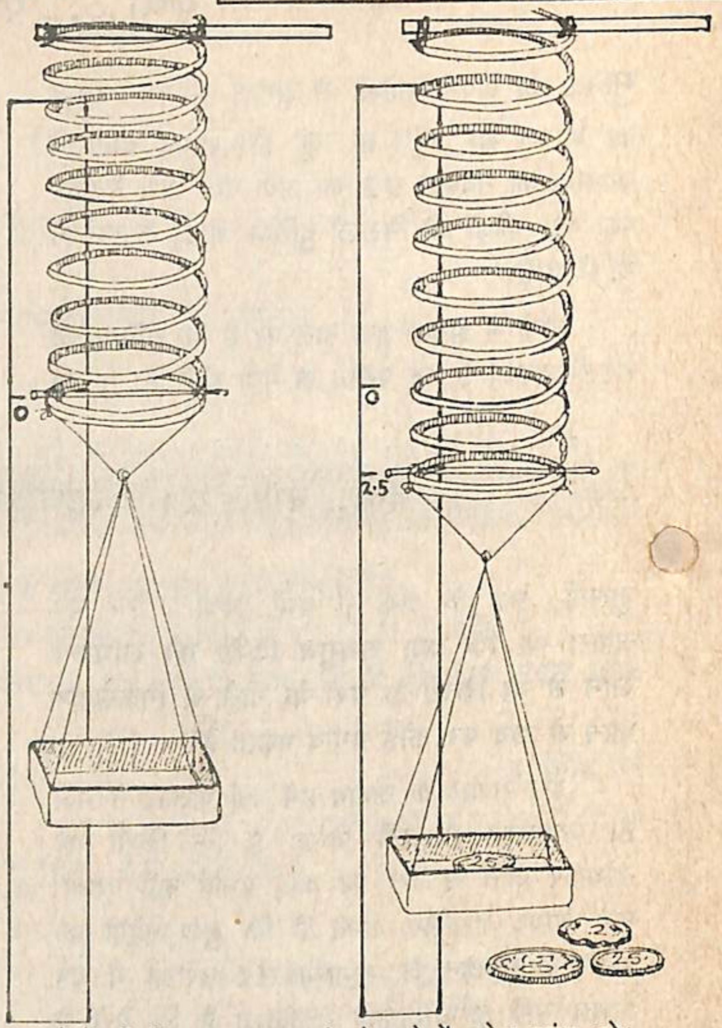

दोनों सिरों पर इस धागे के दोनों छोर बांध दो। **(चित्र देखो)**

अब चूड़ी के दूसरे सिरे पर फुटा बांधना है। इस सिरे के एक घेरे पर फुटे को चपटा रखकर बांधो। फुटे का दूसरा सिरा किसी ऊंचाई वाली जगह (अलमारी या ताक) पर रखकर किताबों या ऐसी ही किसी भारी चीज़ से दबा दो। तराजू को लटकाते समय यह ध्यान रखना होगा कि चूड़ी दीवार या अलमारी से टकराए नहीं।

कोरे कागज़ की 10 से.मी. चौड़ी और 1.5 या 2 फुट लंबी एक पट्टी बना लो। इसे चूड़ी की तराजू के ठीक पीछे की दीवार या अलमारी की सतह पर चिपका दो।

जब पलड़ा ख़ाली हो तो कागज़ पर, सींक की

(अगले पृष्ठ पर जारी)

खाद बनाओ

अपने घर के कूड़े-कचरे का पूरा उपयोग करने का यह बड़ा नायाब और सरल तरीक़ा है। खाद खड्ड या खाद का गड्ढा बनाने के लिए एक 6×3×3 फुट का आयताकार गड्ढा खुदवाओ। गड्ढे का आकार, जगह और ज़रूरत के अनुसार कुछ छोटा कर सकते हो, लेकिन ज़्यादा बड़ा नहीं। गड्ढे के लिए बगीचे या बाड़ी के बाहरी तरफ की जगह चुनना ताकि बाद में दुर्गंध से परेशानी न हो। इस गड्ढे की दीवारों पर, अंदर की ओर से, पत्थर जमा दो। पर पेंदा कच्चा ही रखना जिससे अनावश्यक पानी ज़मीन सोख ले और कम-से-कम दुर्गंध पैदा हो।

अब घर का सारा ऐसा कूड़ा इकट्ठा करो जिसे सड़ाया जा सके। जैसे सब्ज़ी के छिलके, डंठल, चाय पत्ती, अंडे के छिलके, सूखी-झड़ी पत्तियां, कटी हुई घास, राख, बाल, नाखून आदि नियमित रूप से गड्ढे में डालते जाओ। हर तीसरे-चौथे दिन इस गड्ढे में पानी छिड़को। इससे सड़ाने की प्रक्रिया में सहयोगी बैक्टीरिया आसानी से पनपेंगे। जब कचरे की तह लगभग एक फुट मोटी हो जाए तो उसे जमाने के लिए 2-3 इंच मोटी मिट्टी की परत छिड़क दो।

क़रीब चार महीने बाद खाद के गड्ढे का कचरा भुरभुरी मिट्टीनुमा खाद में परिवर्तित हो जाएगा।

अगर तुम्हारे घर या आसपास गड्ढा बनाने लायक जगह नहीं हो, या तुम किसी बहुमंज़िली इमारत में ऊपर की मंज़िल पर रहते हो, तब भी छोटे रूप में यह प्रयोग कर सकते हो। इसके लिए छत या थोड़ा बड़ा-सा छज्जा ही काफी होगा। पर तब तुम्हें मटके, पुराने कनस्तर या डामर के ड्रम की ज़रूरत होगी। इस पात्र को खुली हवा और धूप में, कमरों और खिड़कियों से दूर और ध्यान-से हमेशा ढककर रखना। इसमें भी ऊपर बताए गए तरीक़े से घर का बेकार कूड़ा-कचरा जमा करते रहो। हफ्ते में दो बार इस पर पानी का हल्का-हल्का छिड़काव करो। जब पात्र भर जाए तो ऊपर कुछ मिट्टी डालकर और ढक्कन लगाकर 3-4 महीनों के लिए इसे वैसे ही छोड़ दो। 3-4 महीने बाद तुम्हें बढ़िया खाद मिलेगी।

खाद का पूरा उपयोग करना।

❑ स्मिता अग्रवाल

(पिछले पृष्ठ से आगे)

स्थिति वाली जगह पर शून्य लिख दो। फिर दस पैसे का सिक्का पलड़े पर रखो, सींक काग़ज़ की पट्टी पर जहां तक आई वहां दस पैसे के सिक्के का वज़न लिख दो। (सिक्कों के वज़न नीचे दिए हुए हैं।) इसी तरह 50 पैसे और एक रुपए के सिक्कों को पलड़े पर रखकर हर बार बाक़ी सिक्कों को भी बारी-बारी से रखकर वज़न लिख दो। तुम्हारे पास और भी कोई ऐसी चीज़ें हों जिनका वज़न तुम्हें पहले से मालूम, हो तो उन्हें भी अपनी तराजू के पैमाने (स्केल) पर नोट कर सकते हो। इसी तरह दो अलग-अलग सिक्कों को एक साथ रखकर कुछ बीच के वज़न भी पता करके नोट कर लो। जैसे, नए पच्चीस पैसे+पुराने पच्चीस पैसे का वज़न 5.5 ग्राम होगा।

अब जो चीज़ तुम्हें तौलनी हो, तराजू में रखो। सींक कहां पहुंची? उस जगह पर कितना वज़न लिखा है, यह देखो। बस, तुम्हारी तराजू तैयार।

हो सकता है कई बार किसी चीज़ को तौलने पर सींक दो निशानों के बीच रुके। जैसे, मान लो किसी चीज़ को पलड़े पर रखने से सींक 6 और 7 ग्राम के निशानों के बीच रुकी। तो फिर तुम्हें यह अंदाज़ा लगाना होगा कि उस चीज़ का वज़न 6 ग्राम से कितना ज़्यादा या 7 ग्राम से कितना कम है।

❑ अरविंद गुप्ता

चित्र ❑ अविनाश देशपांडे

वाग्भट

आज हमारे देश में रोगों का इलाज कई तरीक़ों से होता है। कुछ लोग आधुनिक पद्धति से इलाज करवाना पसंद करते हैं, तो कुछ अब भी पुरानी आयुर्वेद पद्धति पर श्रद्धा रखते हैं। आयुर्वेद के कुछ-इलाज सचमुच ही बड़े महत्व के हैं। आयुर्वेद का विकास हमारे देश में हुआ है। सदियों से इस विज्ञान का विकास होता आ रहा है। आयुर्वेदशास्त्र पर चरक और सुश्रुत के ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। वैद्य लोग आज भी इन ग्रंथों का इस्तेमाल करते हैं।

चरक और सुश्रुत की तरह आज वाग्भट के ग्रंथ भी प्रसिद्ध हैं। वाग्भट के लिखे हुए दो ग्रंथ हैं- **अष्टांग-संग्रह** और **अष्टांग-हृदय।** इनमें अष्टांग-संग्रह बड़े महत्व का ग्रंथ है। इसी ग्रंथ के आधार पर बाद में पद्य में अष्टांग-हृदय लिखा गया था। पिछले लगभग एक हज़ार सालों में वाग्भट के ग्रंथों का हमारे देश में बड़ा प्रचार रहा। वैद्य लोग आज भी वाग्भट के ग्रंथों का इस्तेमाल करते हैं। एक कहावत है- वाग्भट के अष्टांग-संग्रह का अच्छा ज्ञान हो तो पुराने ग्रंथ पढ़ना बेकार है और अष्टांग-संग्रह का ज्ञान न हो तो फिर पुराने ग्रंथ पढ़ने से भी कोई लाभ नहीं।

वाग्भट की जीवनी और ग्रंथों के बारे में विद्वानों में कुछ मतभेद हैं। हमारे देश में वाग्भट नाम के कई पंडित हुए हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि अष्टांग-संग्रह और अष्टांग-हृदय एक ही वाग्भट की रचनाएं नहीं हैं। यह विचार विदेशी विद्वानों का है। पर हमारे देश के वैद्यों का विश्वास है कि ये दोनों ग्रंथ एक ही वाग्भट के लिखे हुए हैं। अष्टांग-संग्रह ही प्रमुख ग्रंथ है। यह गद्य और पद्य में लिखा गया है। इसी ग्रंथ के आधार पर बाद में अष्टांग-हृदय की रचना हुई है। यह ग्रंथ केवल पद्य में है। अष्टांग-हृदय को हम अष्टांग-संग्रह का संक्षिप्त संस्करण मान सकते हैं।

वाग्भट अपने ग्रंथ में अपने बारे में बहुत कम जानकारी देते हैं। इनका जन्म सिंधु प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम सिंहगुप्त था और पितामह का नाम वाग्भट था। इनके गुरू अवलोकितेश्वर थे। वाग्भट बौद्ध-धर्म के अनुयायी थे। इनके ग्रंथों में भगवान बुद्ध का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है। बौद्ध-धर्म में भगवान बुद्ध को 'भैषज्यगुरू' यानी वैद्यों के गुरू मानने की परंपरा रही है।

वाग्भट का जन्म ठीक किस साल हुआ, इसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती। पर इतना निश्चित है कि ये गुप्त-काल के बाद में हुए। सभी बातों पर विचार करके यह कहा जा सकता है कि वाग्भट 700 ई. के आसपास जीवित थे।

हम बता चुके हैं कि अष्टांग-संग्रह ग्रंथ गद्य और पद्य में लिखा गया है। पुराने ज़माने में हमारे देश में चिकित्साशास्त्र के आठ अंग माने गए थे। इसीलिए वाग्भट ने अपने ग्रंथ को यह नाम दिया है। अष्टांग-संग्रह ग्रंथ 6 पुस्तकों और 150 अध्यायों में बांटा गया है। इस ग्रंथ के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय हमारे देश में चिकित्सा की पद्धति कैसी थी।

अष्टांग-संग्रह की पहली पुस्तक में चिकित्साशास्त्र की विधि के बारे में जानकारी दी गई है। इसमें बतलाया गया है कि विद्यार्थी को चिकित्साशास्त्र का अध्ययन किस प्रकार करना चाहिए। इसमें दिन और ऋतुओं के प्रभाव की जानकारी है, रोगों के कारण बतलाए गए हैं और नाना प्रकार की भोजन सामग्री तथा विषमय भोजन के लक्षण बतलाए गए हैं। इसी पुस्तक में औषधियों के गुणधर्म, वायु, पित्त और कफ़ की जानकारी और आंख के रोगों के इलाज बतलाए गए हैं।

दूसरी पुस्तक में मानव शरीर रचना के बारे में जानकारी दी गई है। इसमें बताया गया है कि मां के गर्भ में धीरे-धीरे बालक का विकास कैसे होता है। इसमें गर्भवती स्त्री को होने वाले रोगों की भी जानकारी दी गई है। तीसरी पुस्तक में ज्वर, मधुमेह, चर्मरोग, स्नायुरोग आदि के लक्षण बतलाए गए हैं। अंतिम दो पुस्तकों में मुख्यत: बच्चों के रोगों का विवरण है। इसमें पागलपन, लकवा तथा कान, नाक,

मुंह आदि के रोग, इत्यादि के बारे में जानकारी दी गई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वाग्भट ने अपने इस ग्रंथ में सभी रोगों तथा उनके इलाजों के बारे में जानकारी दी है।

हम बता चुके हैं कि वाग्भट का अष्टांग-हृदय ग्रंथ उनके अपने अष्टांग-संग्रह पर आधारित है। इसमें भी 6 पुस्तकें हैं, पर यह 120 अध्यायों में बांटा गया है। इसमें वाग्भट ने चरक, सुश्रुत, भेल, काश्यप, धनवंतरि तथा अन्य अनेक पुराने चिकित्सकों के बारे में जानकारी दी है। पर यह ग्रंथ मुख्यतः अष्टांग-संग्रह के आधार पर ही लिखा गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें वाग्भट ने सुश्रुत के आधार पर शल्य चिकित्सा की भी जानकारी दी है। पर इस ग्रंथ में नाड़ी-परीक्षा और रासायनिक उपचारों का वर्णन नहीं है।

अष्टांग-हृदय केवल पद्य में लिखा गया है। इस ग्रंथ का तिब्बती भाषा में भी अनुवाद हुआ था। इससे पता चलता है कि कुछ ही दिनों बाद वाग्भट की ख्याति देश-विदेश में दूर-दूर तक फैल गई थी। दक्षिण-भारत के वैद्य आज भी वाग्भट के ग्रंथों को सबसे अधिक महत्व देते हैं। इस ग्रंथ के महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि बाद के वैद्यों ने इस पर क़रीब 30 टीकाएं लिखी हैं। आयुर्वेद के किसी भी अन्य ग्रंथ पर इतनी अधिक टीकाएं नहीं लिखी गईं। वाग्भट के अष्टांग संग्रह पर भी टीकाएं लिखी गई हैं। इनमें **इंदु** की लिखी हुई **शशिलेखा** नाम की टीका अधिक प्रसिद्ध है।

पुराने ज़माने में हमारे देश में आयुर्वेद को बड़ा सम्मान प्राप्त था। वैद्यों की ज़िम्मेदारी के बारे में बड़े कड़े नियम थे। वाग्भट ने वैद्यों के कर्तव्यों के बारे में बड़ी अच्छी हिदायतें दी हैं। वे लिखते हैं-

-वैद्य को सबके साथ मित्रता रखनी चाहिए। रोगियों के प्रति दयाभाव रखना चाहिए। दुष्ट रोगी के प्रति भी मन में बदला लेने की भावना नहीं रखनी चाहिए।

-यह चिकित्सा शास्त्र साक्षात अमृत जैसा है। इसे यदि गंदे पात्र में रखा जाए तो यह भयंकर विष बन जाता है। जो वैद्य केवल पोथियों के पन्ने पलटकर चिकित्सा करते हैं, चिकित्सा शास्त्र का गहरा अध्ययन नहीं करते, वे यम की तरह होते हैं। ऐसे वैद्यों से दूर रहना ही अच्छा है।

वाग्भट जिस समय पैदा हुए थे, वह काल भारत के इतिहास में कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। ईसा की पहली शताब्दी से हमारे देश में ज्ञान-विज्ञान की उन्नति शुरू होती है। उस समय स्वतंत्र चिंतन के लिए पूरी छूट थी। एक-दूसरे का खंडन करने की भी स्वतंत्रता थी। इसीलिए विज्ञान की उन्नति हुई थी। खंडन-मंडन से ही विज्ञान आगे बढ़ता है।

पर गुप्त-काल के बाद ब्राह्मण-धर्म ने स्वतंत्र-चिंतन पर पाबंदी लगा दी। कहा जाने लगा कि पुराने ग्रंथों की सारी बातें सही हैं। इसलिए पुरानी बातों का खंडन करने की सहसा किसी की हिम्मत नहीं होती थी। उसी समय यह भी कहा जाने लगा कि पुराना ज़माना सतयुग का था और यह नया ज़माना कलियुग का है। वाग्भट ने यद्यपि पुरानी आयुर्वेद परंपरा को ही आगे बढ़ाया था, फिर भी वाग्भट को कलियुग का चिकित्सक कहा गया।

वाग्भट रूढ़िवादिता के बहुत ख़िलाफ थे। उस समय कुछ लोग कहने लगे होंगे कि पुराने ग्रंथों का आयुर्वेद ज्ञान ही सही है। वाग्भट ने इस बात का ज़बरदस्त विरोध किया। अष्टांग-हृदय के एक श्लोक में वे लिखते हैं

-पुराने ऋषि मुनियों के ग्रंथों में ही सत्यता है, तो चरक और सुश्रुत के ग्रंथों को भी छोड़ दो और केवल भेड़ आदि के ग्रंथों को पढ़ो। असल में सही बात जहां भी मिले, उसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

एक अन्य श्लोक में वाग्भट कहते हैं-

-कोई बात किसी ब्रह्मा ने कही हो या ब्रह्मा के बनाए हुए किसी मनुष्य ने। इससे सत्य बात छिप नहीं सकती। सत्य बात का ही अच्छा परिणाम होगा।

इन कथनों से लगता है कि वाग्भट प्रगतिशील विचारों के समर्थक थे। 700 ई. तक हमारे देश में आयुर्वेद के बारे में जितनी जानकारी जमा हो गई थी, वह सब वाग्भट ने अपने ग्रंथों में रख दी है। उन्होंने अपनी जानकारी के अनुसार भी इनमें बहुत-सी नई बातें जोड़ दी हैं।

पर आज क्या हाल है? हमारे आज के वैद्य सोचते हैं कि पुराना चिकित्सा ज्ञान पूर्णतः सही है। वे

(शेष पृष्ठ 40 पर)

माथापच्ची

(1)

जब आशू के पिताजी का तबादला हो गया और उनका परिवार शहर छोड़कर जाने की तैयारी करने लगा तो मुहल्ले के बच्चों ने मिलकर उन्हें विदाई भोज देने की योजना बनाई। इसके लिए पैसे इकट्ठे करने का भार बिट्टी, शोनू और गुड़िया ने अपने ऊपर लिया।

तीनों ने दिन भर में मोहल्ले के सारे घर 'जो जितना दे दे' के हिसाब से निपटा लिए। अपने अड्डे पे लौटते समय तीनों यही बतियाते हुए आ रहे थे कि किसने कितना वसूला! पता चला कि अगर गुड़िया, बिट्टी को 36 रुपए दे दे तो बिट्टी के पास गुड़िया से दुगने पैसे हो जाएंगे। पर अगर बिट्टी अपने पास से 36 रुपए शोनू को दे दे तो शोनू के पास बिट्टी से दुगने पैसे हो जाएंगे। और अगर यह सब कुछ न करके शोनू अपने पास से 36 रुपए गुड़िया को दे दे तो दोनों (गुड़िया और शोनू) के पास बराबर पैसे हो जाएंगे।

इस तरह बातचीत में अड्डे तक पहुंचने का समय बिताकर तीनों ने सारे पैसे मुन्नी दीदी के पास जमा कर दिए। क्या तुम बता सकते हो कि ये कुल पैसे कितने होंगे?

(2)

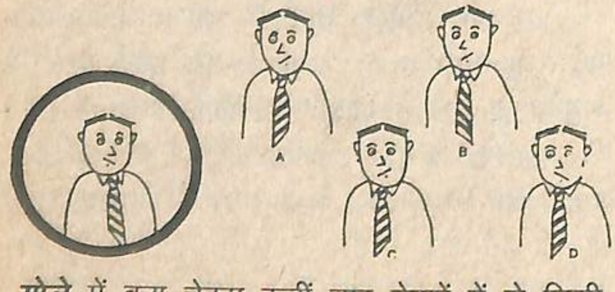

***गोले** में बना चेहरा इन्हीं चार चेहरों में से किसी एक का आइने (शीशे) में बना प्रतिबंब है। बताओ कौन-सा चेहरा है यह?*

(3)

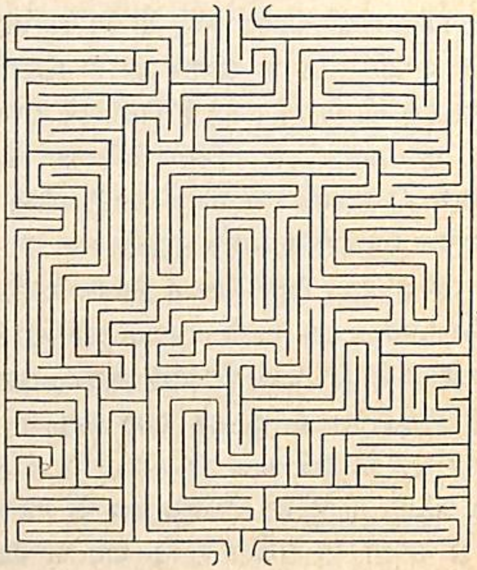

इस भुलभुलैयां में ऊपर के खुले छोर से घुसकर नीचे के खुले छोर से बाहर निकलना है। पर सावधान रहना क्योंकि हर बंद गली में ख़तरा है। उनसे बचकर चलना होगा। और सही रास्ता सिर्फ़ एक ही है। ढूंढो तो ज़रा।

(4)

एक भिन्न संख्या है। उसमें चाहे 4 जोड़ो या उसमें 4 से गुणा करो, जवाब वही आएगा। कौन-सी है यह संख्या?

(5)

एक बार हमारे घर कुछ मेहमान आए हुए थे। रात को सोने की तैयारी की, तो पता चला कि मेहमानों को अलग-अलग पलंग देने पर एक मेहमान बच जाता। पर एक पलंग पर दो-दो मेहमानों को सुलाने पर एक पलंग बच जाता। तो जोड़-घटाकर बताओ कि मेहमान कितने और पलंग कितने?

(6)

रीता के स्कूल में राज्यस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिताएं चल रही थीं। जब हमने उससे पूछा कि प्रतियोगिता का फल क्या निकला तो उसने सीधे-सीधे न बताकर कुछ यूं जवाब दिया, "आख़िरी दौर तक सिर्फ़ छह लड़कियां पहुंची थीं। मान लो वो सब तुम्हारी ओर चेहरा करके खड़ी हैं। तो, शाहपुर वाली लड़की, दीना और जबलपुर वाली के बीच है। भावना और भोपाल की लड़की कतार के दोनों छोरों पर हैं। देवास से आई लड़की, इला और हरदा वाली के बीच खड़ी है। शबनम इटारसी वाली लड़की के बाजू में नहीं है। और ज्योति तुम्हारे दाहिनी ओर, कतार के छोर पर, हरदा की लड़की के पास खड़ी है। यह भी बता दूं कि जो लड़की जीती केवल उसके नाम का और उसके शहर के नाम का पहला अक्षर एक ही है। अब तुम ही बूझ लो कि कौन जीती!"

मैं तो नामों के इस चक्कर में बुरी तरह उलझ गई हूं। तुम ही बताओ कौन जीती होगी।

वर्ग पहेली-20

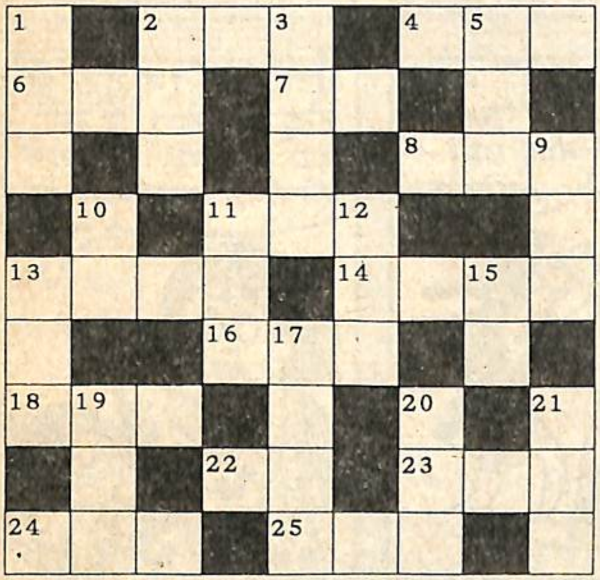

संकेत: बाएं से दाएं

2. माल सजाने में एक नाम (3)
4. कवि की रचना (3)
6. 'बिना गम' में छिपी बादशाह की पत्नी (3)
7. संख्या सूचक एक शब्द और पत्थर भी (2)
8. आसान (3)
11. केवल शक्कर से बनी एक मिठाई (3)
13. कनभया की उलटफेर में डरावना (4)
14. जो जंगल का राजा हो (4)
16. नाक के बीच आधे हम, बेमतलब (3)
18. द्रव (3)
22. हत्या (2)
23. इसे चाहे जितना खा लो, पर पेट नहीं भरेगा (3)
24. अंग्रेज़ी में केला, हिंदी में निर्माण (3)
25. कुएं से पानी निकालने का यंत्र (3)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. सुबह (3)
2. 'बस मर' में युद्ध (3)
3. इंसानियत (4)
5. अलग करना (3)
9. पानी में खिलने वाला फूल (3)
10. बया हवा में उड़े तो उसमें 'शरम' भी है। (2)
11. अपशब्द कहना, बड़बड़ाना (3)
12. पशु या पक्षी का बच्चा (3)
13. किराएदार (3)
15. मुंह से टपकती है (2)
17. इसके साथ किसान को जोड़ो तो एक राजनैतिक पार्टी का चुनाव चिन्ह (4)
19. शोर-मचाना में आयोजन (3)
20. विपत्ति (3)
21. सिर का एक गहना (3)

(लक्ष्मणसिंह क्षत्री, पूर्व माध्यमिक शाला, कोरजा, पेंड्रारोड, बिलासपुर द्वारा तैयार।)

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-20 का हल फरवरी, 93 के अंक में देखें।

बिंदु • साहू
दूध कट गया! जरूर यह बिंदु की शरारत है।
बिंदु sss... तूने दूध में नीबू निचोड़ा है कि नहीं
नहीं, मां, मैं ऐसा क्यों करने लगी?
मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि तूने ही दूध में नीबू निचोड़ा है।
नहीं, मां, मैंने दूध में नीबू नहीं निचोड़ा।
बेटी, यदि तूने दूध में नीबू निचोड़ा है तो सच कह दो। घबराने की कोई बात नहीं।
पिताजी मैं सच कहती हूं मैंने दूध में नीबू नहीं निचोड़ा।
तो दूध कट कैसे गया??
मैंने दूध में फिटकरी डाल दी थी

खेल और खिलौने

मामा जी अभी हाल ही अमेरिका से लौटे थे। पंकज के यहां जब वे मिलने के लिए आए तो अपने साथ ढेर की ढेर चीज़ें लेते आए थे। एक टेपरिकार्डर, एक मिक्सर, एक टोस्टर और जाने क्या-क्या। मम्मी के लिए नायलॉन की साड़ियां और सेंट, पापा के लिए टेरिलिन शर्ट्स और इलेक्ट्रिक शेवर तथा बड़े भैया के लिए बढ़िया-सा कैमरा।

पंकज और पम्मी भी घाटे में नहीं रहे थे। पंकज के लिए एक रेलगाड़ी थी जो पटरियों पर चलती थी और चलते समय टिंकल-टिंकल वाला गीत भी बजता।

पम्मी की गुड़िया भी बड़ी प्यारी थी। इतनी बड़ी थी कि पड़ोस की आंटी के बबलू की तरह थी, पर वह पालने में पड़ी नहीं रहती। बल्कि चाभी देने पर अपनी सफ़ेद झालरदार फ्रॉक को उठाकर गोल-गोल नाचती। नाचते हुए उसके भूरे-सुनहरे बाल और नीली-नीली आंखें और भी सुंदर लगतीं।

खिलौने हाथ में आते ही वे खुशी से झूम उठे। उस बड़े से पैकेट को गोद में उठाए सीढ़ियों की ओर लपके ही थे कि मम्मी की गरज सुनाई दी,

"ए, खबरदार, जो गली-मोहल्ले में जाकर इनकी नुमाइश की। वह बंदर सेना अभी इकट्ठी हो जाएगी और एक दिन में सत्यानाश करके रख देगी।"

बढ़े हुए पांव जहां के तहां रुक गए। तब बच्चों को भान हुआ कि यह तो मामा जी थे जिनकी बदौलत खिलौने हाथ लग भी गए। मम्मी का वश चलता तो कब से अलमारी में बंद हो गए होते। और तभी निकलते जब मम्मी की सहेलियों के सामने उनका प्रदर्शन होता।

खिलौने मिल गए हैं इसी को गनीमत जानकर बच्चे घर ही में खेलने लगे। सोचा, मम्मी बेचारी ठीक ही कहती हैं। इतने महंगे खिलौने भले कोई रोज़-रोज़ ख़रीद सकता है। और फिर क्या पता ये यहां मिलें भी नहीं।

सच, देखा जाए तो खिलौनों की खुशी आधी रह गई थी। मामा जी के अमेरिका जाने की बात को लेकर अक़्सर पंकज क्लास में रौब झाड़ता था। उनके लौट आने की भी उसने बड़े हर्ष और गर्व के साथ घोषणा की थी। तब से सभी दोस्तों को उत्सुकता बनी हुई थी कि मामा जी पंकज के लिए क्या लाएंगे। पंकज जब तक स्कूल में होता, रेलगाड़ी का रहस्य मन के बाहर आने को कुलबुलाता रहता- पर मम्मी की डांट का डर जो सिर पर सवार रहता।

पम्मी तो इन दिनों गुड़िया की होकर रह गई थी। मम्मी ने कई बार गुड़िया को ढंग से सहेज कर रख देना चाहा, पर पम्मी के आगे एक न चली। फिर भी पम्मी की खुशी जैसे अधूरी थी। वह रीता, अंजू, बबली, सुषमा-सबको गुड़िया दिखाना चाहती थी, उसकी प्रशंसा सुनना चाहती थी। पर मम्मी की वजह से यह सब कुछ नहीं हो पा रहा था।

आठ दिन तक बच्चे बड़ी समझदारी से खेलते रहे। लेकिन फिर अपने आपसे खेलकर वे ऊबने लगे। नए खिलौनों का मोह भी छूटता न था और घर की चारदीवारी में दम भी घुटने लगा था। तिस पर सितम यह कि पाबंदिया सिर्फ़ उन्हीं पर थीं।

मम्मी इन आठ दिनों में अपनी नई साड़ियां दिखाने के लिए शहर के हर परिचित घर में हो आईं थीं। बाहर जाते हुए सेंट इतना लगातीं कि किसी बगीचे की तरह महक उठती थीं। पापा रोज़ नए शर्ट्स पहनकर दफ़्तर जाते। करंट लगने के डर से शेव तो रोज़ की तरह रेज़र से ही बनाते पर हर आने-जाने वाले के सामने इलेक्ट्रिक शेवर का प्रदर्शन ज़रूर करते। भैया आए दिन घरवालों की, कुत्ते-बिल्लियों की, दूध वाले की, धोबी की, सब्ज़ी वाले की तस्वीरें उतारते फिरते। आधी से ज़्यादा तस्वीरें काली स्याह हो गई थीं और उनकी धुलाई का बिल देखकर पापा बौखला उठे थे। टेपरिकार्डर ड्रॉइंग रूम की शोभा बना हुआ था और उसमें पड़ोस के बबलू के रोने से लेकर मिश्रा आंटी के बेसुरे गाने तक- सबकी आवाज़ रिकार्ड हो चुकी थी। अपनी आवाज़ रिकार्ड करवाने के लिए आने वाले मेहमानों की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि नाश्ते का ख़र्च दुगुना हो गया था। हर फटीचर गायक की रिकार्डिंग के समय चुप्पी साधे रहना पड़ता था। यह और एक मुसीबत थी।

गरज यह कि मामा जी की लाई हुई हर चीज़

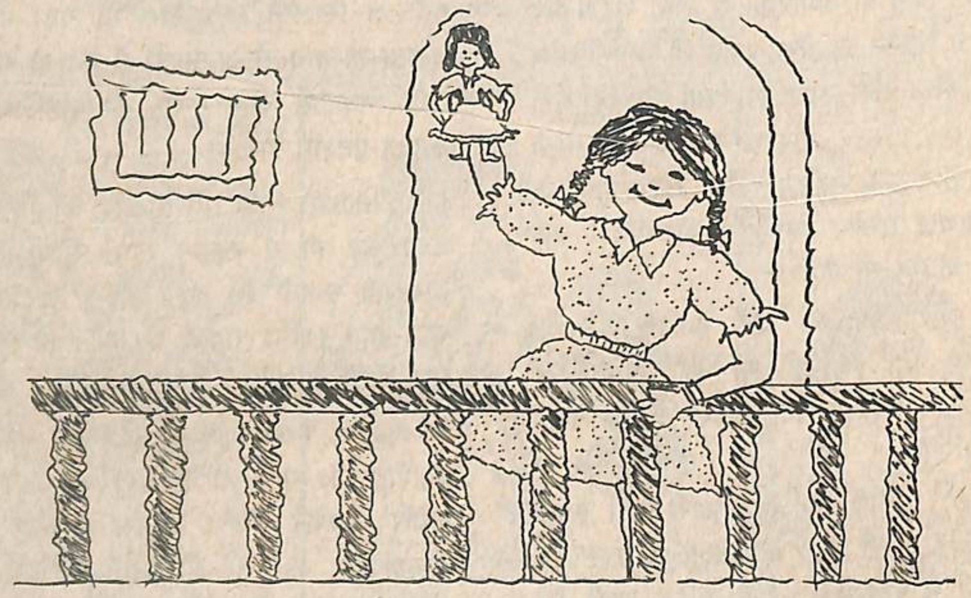

का खुलेआम प्रदर्शन हो रहा था। सिर्फ़ खिलौने थे जिन्हें दरवाज़े के बाहर झांकने का हुक्म न था।

उस दिन मम्मी रोज़ की तरह किसी रिश्तेदार के यहां गईं हुई थीं। पापा दफ़्तर में थे और भैया कॉलेज में। 'आल लाइन क्लीयर' जानकर पम्मी गुड़िया को लेकर गैलरी में जा खड़ी हुई। नीचे मिश्रा जी के आंगन में बच्चों की हमेशा की तरह हुड़दंग मच रही थी।

"पम्मी, आ जा, नदी पहाड़ खेलेंगे।' रीता ने चिल्लाकर कहा।

पम्मी जाने के लिए सोच रही ही थी, कि अंजू ने कहा, "तेरे हाथ में क्या है, पम्मी! गुड़िया?"

"हां गुड़िया है नाचने वाली, मामा जी लाए हैं। ऊपर आओ तो दिखाऊं।" पम्मी ने जवाब दिया।

कहने भर की देर थी, रीता, अंजू, बबली, सुषमा, दिनेश, पप्पू-सारी मंडली ऊपर चढ़ आई। पम्मी ने दरी बिछाकर गैलरी में ही सबको बिठाया, फिर चाभी भरकर गुड़िया को छोड़ दिया। उसके थिरकते गुलाबी पांव, लहराता सफ़ेद फ्रॉक, मटकती हुई नीली आंखें और उड़ते हुए सुनहरे बाल-सब कुछ इतना सुंदर और अद्‌भुत था कि बच्चे आनंद और आश्चर्य से विभोर होकर तालियां पीटने लगे। उनके उस आनंद को देखकर पम्मी ने एक अपूर्व संतोष का अनुभव किया। दर्शकों के बार-बार आग्रह करने पर गुड़िया को फिर एक बार नाचना पड़ा-फिर एक बार और फिर एक बार।

पंकज दरवाज़े में खड़ा था। पम्मी की गुड़िया की लोकप्रियता वह सह नहीं सका। चुपके से अपनी रेल उठा लाया और फिट करने के बाद बोला, "इधर देखा-मेरे पास क्या है।"

बस, सभी की आंखें उधर हो गईं।

"अरे, यह तो सचमुच की रेल है!"

"अरे यह तो गाती है?"

"देख तो पटरियां भी हैं, बिल्कुल असली जैसी।"

फिर एक बार तालियां, फिर एक बार और चलाने का आग्रह। बच्चों को समझ में नहीं आ रहा था कि गुड़िया का नाच देखें या रेलगाड़ी। कोई गुड़िया के बाल छूकर देखना चाहता, कोई उसकी फ्रॉक पर हाथ फेर रहा है, किसी को उसके जूते पसंद आ गए हैं। कोई पटरियां उठाकर देख रहा, कोई डिब्बों की बनावट को परख रहा है तो कोई उस संगीत का रहस्य जानना चाहता है। सभी बच्चे इतने डूबे हुए थे कि सीढ़ियों की आहट का पता ही न चल सका।

"यह क्या हो रहा है?" मम्मी की गरजदार आवाज़ ने सबको धरती पर ला खड़ा किया। "कर ली न भीड़ इकट्ठा? सारी चीज़ों का कल्याण कर लोगे, तभी तुम लोगों को चैन आएगा।"

लाख छोटे थे पर बच्चे मान-अपमान ख़ूब समझते थे। पलक झपकते ही सारी गैलरी खाली हो गई। पंकज और पम्मी चुपचाप खिलौने समेटते रहे और मम्मी की डांट सुनते रहे।

काफी देर तक पम्मी कमरे में गुम-सुम बैठी रही। एकाएक रेल की-सी ऊंची सीटी ने उसके कान खड़े कर दिए। गैलरी में आकर देखा, मिश्रा जी के आंगन में लोहे के बड़े से पलंग पर सब चढ़े हुए हैं। उमेश ड्राइवर बना सीटी मार रहा है। पप्पू गार्ड बना हुआ चिंदी की झंडियों को दोनों हाथों से हिला रहा था। रीता, अंजू, बबली सब-की-सब पैसेंजर बने हुए थे। रेलगाड़ी का नशा शायद बच्चों के दिमाग़ पर अब भी सवार था।

पम्मी का मन नीचे जाने के लिए ललचा उठा पर उसके पैर वहीं जमकर रह गए। क्या वे लोग उसे खिलाएंगे भी?

"पम्मी! रेल में चलेगी?" नीचे से अंजू ने आवाज़ दी।

पम्मी समझ गई कि उसे माफ़ कर दिया गया है। दौड़कर नीचे पहुंची।

"ड्राइवर साहब, गाड़ी रोको। एक सवारी लेनी है।" लड़कियां चिल्लाईं और पप्पू के झंडियां हिलाते ही उमेश ने अपनी छुक-छुक बंद कर दी।

"कहां जाएंगी, बहन जी?" ड्राइवर ने पूछा

"बंबई।"

अख़बार के एक टुकड़े को उसके हाथ में देकर ड्राइवर ने दुबारा सीटी दी और पम्मी के बैठते ही गाड़ी चलनी शुरू हो गई। रीता ने उसके लिए अपने पास जगह दी। बबली साड़ी में लिपटी अपनी गुड़िया की ओर देखकर बोली, "खिड़की मत खोलना, बहन! इसे कल से बुखार है।"

पम्मी को उस गुड़िया पर प्यार हो आया और उसने उसे अपनी गोद में लिटा लिया। उसे मुन्नी की याद हो आई जिसे नई वाली गुड़िया आने के बाद से उसने कहीं पटक रखा था।

पंकज जो इतनी देर से गैलरी में खड़ा तमाशा देख रहा था, लोटा-गिलास लेकर नीचे पहुंच गया। अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही उसने 'चाय गरियम' की आवाज़ लगाकर थके हुए मुसाफ़िरों को पानी पिलाया। उसकी ज़ोरदार बिक्री हुई।

इसी तरह पांच-पांच मिनट से स्टेशन आ रहे थे। भोपाल से बंबई जाते हुए रास्ते में हर वह गांव पड़ रहा था जो बच्चों को याद था- कभी दिल्ली, कभी बरेली, कभी नागपुर, कभी इंदौर। लेकिन किसी स्टेशन पर कोई उतरना नहीं चाह रहा था। सब धड़धड़ाती हुई ट्रेन के साथ बंबई जाना चाहते थे।

नीचे आंगन में बच्चों का खेल ज़ोरों पर था। ऊपर कांच की अलमारी में बंद गाने वाली रेल और नाचने वाली गुड़िया उस खेल को हसरत से देख रहे थे।

❑ मालती जोशी

('पराजय' कहानी संग्रह से साभार)

सभी चित्र : वैशाली श्रीवास्तव

(पृष्ठ 33 से आगे)

आज भी सुश्रुत, चरक और वाग्भट आदि के ग्रंथों से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। पिछले क़रीब एक हज़ार साल से हमारे देश का चिकित्सा ज्ञान लगभग रुका हुआ पड़ा है।

आज पाश्चात्य देशों का चिकित्सा विज्ञान बहुत उन्नति कर चुका है। हमारे वैद्यों को इस नए ज्ञान का भी परिचय प्राप्त करना चाहिए। चरक, सुश्रुत और वाग्भट की कई बातें आज भी उपयोगी हैं। पर आज केवल पुराने ज्ञान पर भी निर्भर रहने से नहीं चलेगा। आज यदि वाग्भट जीवित होते तो वे भी कहते कि रूढ़िवादिता को छोड़कर नए ज्ञान के प्रकाश में आयुर्वेद शास्त्र को आगे बढ़ाना ज़रूरी है।

❑ गुणाकर मुले

('प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक' से संक्षिप्त' साभार)

दिलीप कुमार गौर, खिड़किया, म.प्र.

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/92

प्रदीप पंकज, लखनऊ, उ. प्र.

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना